किशोर गाथा-माला—१

अनमोल गाथाएं

ANMOL GATHAYEN

by

SHYAM LAL 'MADHUP'

Rs 3 00

प्रथम सस्करण १९६६

मूल्य . तीन रुपया

प्रकाशक
जगदीश भारद्वाज,
सामयिक प्रकाशन,
९५८३ जटवाड़ा, दरियागंज
दिल्ली-६

दो शब्द

बच्चो एव किशोरो मे ज्ञान वृद्धि के लिए यह आवश्यक है कि उन्हे ऐसी पुस्तकें पढने हेतु दी जाएँ जिससे उनकी बुद्धि का विकास हो सके। साहित्य का बच्चो के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसी बात को सम्मुख रखते हुए मैंने प्रस्तुत पुस्तक 'अनमोल गाथाएँ' बच्चों की रुचि को ध्यान मे रख कर लेखनी बद्ध करने का भरसक प्रयत्न किया है।

प्रस्तुत पुस्तक मे राष्ट्रपिता, राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री एव उपप्रधानमन्त्री आदि उन महान् नेताओ का जीवन परिचय दिया गया है जिन्होंने राष्ट्र की बागडोर हाथो मे लेकर निस्वार्थभाव, धैर्य, निष्ठा और विश्वास के साथ कार्य करते हुए अपने देश को गौरव प्रदान किया और कर रहे है। नव बालको एव बालाओ के लिए यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी, मुझे पूर्ण विश्वास है।

कबीर नगर
दिल्ली-३२

क्रम-विषय

१–राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

"घृणा पाप से करो पापी से नहीं"—गांधी

भारत का कौन ऐसा व्यक्ति होगा जो राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के नाम से परिचित न हो। भारतवासी ही नहीं आज समस्त विश्व बापू के सामने श्रद्धा से झुक जाता है। यद्यपि बापू आज हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनके सिद्धान्त आज भी हमारा मार्गदर्शन करा रहे हैं। बापू ने बिना हथियार के अहिंसा का मार्ग अपना कर अंग्रेजों को भारत से निकाला और गुलामी

की जंजीरों में जकड़ी भारत माता को स्वतन्त्र कराया।

पूज्य राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी का जन्म दो अक्टूबर १८६९ ई० को काठियावाड़ के पोरबन्दर नामक शहर में हुआ था। इनके पिताजी का नाम कर्मचन्द गांधी था। अधिक पढ़े-लिखे न होने पर भी इनके पिताजी राजकोट के दीवान रहे। इनकी माता धार्मिक विचारों की थी। अतः बचपन में वह धार्मिक कहानियाँ ही इन्हें सुनाया करती थी।

महात्मा गांधीजी का पूर्व का नाम मोहनदास था। इनका पूरा नाम मोहनदास कर्मचन्द गांधी था। बाल्य अवस्था में मोहनदास 'पोरबन्दर' के एक स्कूल में प्रविष्ट हुए। पढ़ने में बुद्धि इतनी तीव्र न थी फिर भी शिक्षा प्राप्त करने के लिए वे प्रयत्नशील रहे।

एक बार की बात है एक शिक्षा अधिकारी महोदय एक दिन स्कूल का निरीक्षण करने के लिए आये। उसने कक्षा के समस्त विद्यार्थियों को एक सवाल बोला। मोहनदास पढ़ने लिखने में कमजोर थे ही, उन्हें वह सवाल नहीं आया। अध्यापक महोदय ने उसे सवाल न करते देख साथ के लड़के की नकल कर लेने का संकेत किया परन्तु मोहनदास ने नकल करना उचित न समझा और अध्यापक महोदय के कहने पर उसने ऐसा अनुचित कार्य करने से इन्कार कर दिया।

बचपन बीता और जब वे युवा अवस्था में प्रविष्ट हुए तो तेरह वर्ष की आयु में उनका विवाह कस्तूरबा से कर दिया गया। विवाह होने के उपरान्त उनकी पढ़ाई निरन्तर चलती रही और सन् १८८३ में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की थी। शिक्षा ग्रहण करते हुए आप ने कई पारितोषिक भी प्राप्त किये थे।

मैट्रिक की परीक्षा पास करने के पश्चात् मोहनदास भाव-

नगर के सामलदास कालिज मे प्रविष्ट हुए पर पिता की अचानक मृत्यु ने इन्हे निराश कर दिया। आगे शिक्षा ग्रहण करने का विचार छोड़ अपने एक हितैषी के परामर्श पर कुछ रुपये का प्रबन्ध करके वे बैरिस्ट्री पढने के लिए विलायत जाने को तैयार हो गये।

उस समय भारत की सत्ता अंग्रेजो के हाथ मे थी। मां नही चाहती थी कि उसका पुत्र विलायत जावे। क्योंकि वह जानती थी वहां शराब मांस आदि का प्रयोग करके वह अपने धर्म से डिग जायेगा। लेकिन जब मोहनदास ने अपनी माता के सामने प्रण किया कि वह विलायत मे कभी भी शराब, मांस आदि का प्रयोग नही करेगा, तब उनकी माता पुतली बाई ने जो धार्मिक स्वभाव की महिला थी उन्हे जाने की आज्ञा दे दी। और चार सितम्बर सन् १८८७ को मोहनदास बैरिस्टी पास करने के लिए बम्बई से विलायत के लिए रवाना हो गये। उस समय वे एक पुत्र के पिता बन चुके थे।

विदेश मे रह कर गांधीजी मांस, मदिरा और व्यभिचार से अलग रहे। अपनी माता के सामने किया हुआ प्रण उन्होने पूरी तरह से निबाहा। इंग्लैण्ड मे रह कर धर्म परायण व्यक्तियों का इन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा और वे धार्मिक पुस्तकों के पढने मे रुचि लेने लगे। भगवद्गीता और बाईबिल का इन पर विशेष प्रभाव पड़ा है।

मे आरम्भ की लेकिन सफल न हो सके। कुछ समय पश्चात् दक्षिणी अफ्रीका की एक मुस्लिम कम्पनी ने किसी मुकदमे की पैरवी के लिए इन्हे अफ्रीका बुलाया और अप्रैल १८९३ मे गाँधीजी अफ्रीका के लिए चल दिये। इस यात्रा मे उन्हे जो अनुभव हुआ उनमे यह विशेष था कि योरुपियन भारतवासियो को घृणा भरी दृष्टि से देखते है।

गाधी जी 'डर्बन' पहुँचे। यही से उनका राजनैतिक जीवन का प्रारम्भ हुआ। उस घटना का गाधीजी पर बुरा प्रभाव पडा जब अदालत मे न्यायधीश के सामने उन्हे पगडी उतार कर जाने को कहा गया। गाधीजी ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया और वे अदालत से लौट आये। उन दिनो अफ्रीका मे काले-गोरे का प्रश्न लेकर भारतीयो के साथ बुरा व्यवहार किया जा रहा था। गाधीजी के साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया गया।

एक बार गाधीजी प्रिटोरिया जा रहे थे। उनके पास प्रथम श्रेणी का टिकिट था। जब वे रेलगाडी के प्रथम दर्जे के डिब्बे मे चढने लगे तब गोरो ने गाधीजी को नीचे ढकेल दिया। यहाँ तक की उन्हे पीटा और 'कुली' कहकर उनका अपमान किया गया।

भारतीयो के प्रति अपमान और अन्याय पूर्ण बर्ताव गाधीजी सहन न कर सके और प्रिटोरिया पहुँचकर उन्होने आन्दोलन आरम्भ कर दिया। एक ओर आन्दोलन आरम्भ हुआ दूसरी ओर नेटाल की सरकार भारतीयो को [illegible] से वंचित रखना चाहती थी। इस बर्बरता पूर्ण बर्ताव से भारतीयो मे आन्दोलन की एक नई लहर दौड गई। भारतीयो के प्रति ऐसे अनुचित व्यवहार को रोकने के लिए उपनिवेश—मन्त्री लार्ड रिपन के नाम एक प्रार्थना पत्र भेजा गया, जिस पर दस हजार से अधिक भारतीयो ने हस्ताक्षर किये थे।

इसी आन्दोलन के दौरान गाधीजी ने सन् १८९४ को 'नेशनल इण्डियन काग्रेस' नामक सस्था की स्थापना की थी। आन्दोलन ने जोर पकडा। काफी व्यक्ति गाधीजी के शिष्य बन गये। १८९६ मे डर्बन के समुद्री तट पर गोरी सरकार ने गाधीजी पर पत्थर फेके और उन्हे पीटा भी गया लेकिन गाधीजी ने आन्दोलन की आग को और उत्तेजित कर दिया था।

आन्दोलन को अधिक बढते देख गोरी सरकार ने गाधीजी को गिरफ्तार कर लिया और उन्हे छ मास की सजा सुना दी गई। इससे गाधीजी का मनोबल और बढ गया। जेल से छूटने के बाद गाधीजी अपने कार्य मे लगे रहे। उनका उद्देश्य भारतीयो को समान अधिकार दिलाना था।

उन दिनो भारत के अनेक भागो मे हिसात्मक घटनाए घटी। उस समय गाधीजी भारत आ चुके थे। देश की स्थिति को देखते हुए श्री गोखलेजी ने गाधीजी को सारे देश का भ्रमण करने को कहा। इसी देश भ्रमण के समय गाधीजी ने साबरमती नदी के निकट 'सत्याग्रह आश्रम' की स्थापना की।

जलियाँवाला बाग मे अग्रेजो द्वारा भारतीयो पर किया गया अत्याचार कभी भुलाया नही जा सकता।

गाधीजी अग्रेजो के बढते हुए अत्याचारो को सहन न कर सके और उन्होंने १९२२ को वायसराय के नाम खुला पत्र भेजा। उसमे उन्होंने लिखा था कि सरकार को अपनी अन्यायपूर्ण नीति बदल देनी चाहिए अन्यथा परिणाम भयकर होगे। लेकिन वायसराय ने उस पत्र पर कोई ध्यान नही दिया।

उन्ही दिनो चौरी-चौरा मे उपद्रव हो रहे थे। वहाँ कुछ सिपाहियो तथा एक पुलिस अफसर को गोली मार दी गई थी। पुलिस चौकी को जला कर राख कर दिया गया था। उसी के परिणाम स्वरूप गोरी सरकार ने गाधीजी को राजद्रोही घोषित कर के गिरफ्तार कर लिया।

सन १९२४ मे जेल से छूटने के बाद गाधीजी ने राजनीतिक और सामाजिक सेवाओ को प्रोत्साहन दिया और आन्दोलन को मजबूत करते रहे। सारे देश ने तन-मन धन से गाधीजी का साथ दिया।

अंग्रेजो ने 'नमक कानून' बनाया। उसे तोड़ने के लिए गाधी जी ने १२ मार्च १९३० को दाण्डी यात्रा की। उसमे उन्हे फिर गिरफ्तार कर लिया गया। हजारो लोग उन गिरफ्तारियो मे शामिल थे।

सन् ३१ में ब्रिटिश शासक वर्ग ने गाधीजी को लदन मे हो रही 'गोलमेज कान्फ्रेंस' के लिए बुलाया, लेकिन वहा भी कोई नतीजा न निकला और निराश होकर गाधीजी चार जनवरी १९३२ को भारत लौट आये। भारत आने पर उन्हे फिर से गिरफ्तार कर लिया गया।

नाम से सम्बोधित किया। उनका कहना था कि सभी भगवान के जन है फिर परस्पर भेदभाव कैसा ? इसी उद्देश्य को लेकर गाधीजी ने 'हरिजन-सघ' की स्थापना की।

हिंसात्मक कार्रवाइयो के गाधीजी कट्टर विरोधी थे। वे जानते थे अहिंसा मे जो शक्ति है वह हिंसा मे नही ? अत उन्होने अपने सत्याग्रह अहिंसात्मक ही चलाये।

हरिजनो के लिए गाधीजी ने जो कार्य किया वह भारत की उन्नति का एक नवीन मार्ग था। जब गाधीजी ने छूआ-छूत को खत्म करने के लिए आमरण अनशन आरम्भ किया तो नेताओं तथा भारतीयो पर उनका गहरा प्रभाव पडा। इसी के फल-स्वरूप हरिजनो के लिए मन्दिरो के दरवाजे खोल दिये गये। सभी ने एक दूसरे को परस्पर गले लगाया। इसी से गाधीजी ने अछूतो को गले लगाकर आपसी भेद-भाव को समाप्त किया।

देश को अग्रेजो से मुक्त कराने के लिए जगह-जगह आन्दोलन हो रहे थे। उन दिनो आचार्य विनोबा भावे ने भी सत्याग्रह किये थे।

कर मई १९४४ मे उन्हे जेल से रिहा कर दिया गया।

विद्रोह की आग दिनो दिन बढती जा रही थी। देशभक्तो ने जगह-जगह अग्रेजो के खिलाफ उपद्रवो को बढा दिया था। उन्ही दिनो भारत के बटवारे को लेकर मि० मुहम्मदअली जिन्ना ने देश मे एक और हलचल उत्पन्न कर दी थी। उसी के परिणाम स्वरूप देश के अन्य भागो मे साम्प्रदायिकता की आग भडक उठी।

गाधीजी इस भडकती आग को देख दुखी हुए। वे नही चाहते थे कि हिन्दु-मुसलमान परस्पर लडे। इसी भावना को लेकर साम्प्रदायिक दगो को शान्त करने का प्रयत्न किया।

उधर गोरी सरकार तग आ चुकी थी। भारत से अपने पैर उखडते देख लार्ड वेवल ने भारत को आजाद करने के लिए एक सम्मेलन शिमला मे बुलाया लेकिन उसका भी कोई परिणाम न निकला।

सन् १९४६ मे 'आन्तरिक' सरकार की स्थापना हुई और पन्द्रह अगस्त १९४७ को भारत आजाद कर दिया गया। साथ ही भारत के दो टुकडे हो गये। एक हिन्दुस्तान दूसरा पाकिस्तान। इसी बटवारे ने देश मे साम्प्रदायिकता की आग को चेतन कर दिया। भारत को आजादी मिली, किन्तु साथ ही खुशियाँ दुखो मे बदल गई। देश के बटवारे मे लाखो लोग मारे गये। जाने कितने घर बर्बाद हुए। खून की नदियाँ बहते देख गाधीजी को आत्मिक कष्ट पहुचा और उन्होने पूर्ण शक्ति से अहिंसा का प्रचार किया।

गाधीजी बगाल मे हो रहे दगो को शान्त करने के लिए जगह-जगह घूमे। उधर दिल्ली मे साम्प्रदायिकता की आग भडकी हुई थी। उसे बुझाने के लिए गाधीजी दिल्ली आये। उन्होने उपवास किये आमरण अनशन आरम्भ किया तब वहाँ

जाकर दगे शान्त हुए। उन्ही दिनो महात्मा गाधीजी ने सबको अहिंसा का उपदेश दिया। वे कहा करते थे, 'राम-रहीम, एक हैं' इसीलिए वे अपने कीर्तन मे भी यही गाया करते थे—

ईश्वर अल्लाह तेरा नाम,
सब को सन्मति दे भगवान्।

दिल्ली के बिरला भवन मे गाधीजी प्रात सन्ध्या यही उपदेश लोगो को दिया करते थे। बहुत से लोगो को उनका यह ढग अच्छा न लगा और उन्होने महान् आत्मा का अन्त करने का षड्यन्त्र रच डाला।

और ३० जनवरी, १९४८ की साझ को नाथूराम गोडसे नामक एक व्यक्ति ने पिस्तौल की गोलियो से मानवता के पुजारी की हत्या कर दी। गाधीजी के सीने मे तीन गोलियाँ लगी थी। मरते समय उनके मुख से 'राम' का नाम निकला था। उसी क्षण भारत की महान् आत्मा ईश्वर मे विलीन हो गई।

बापू ने भारतीयो के साथ बहुत उपकार किये। हमको स्वतन्त्र कराया। पारस्परिक भेद-भाव को मिटा कर अहिंसा पाठ पढाया।

सचमुच बापू अहिंसा के पुजारी प्रेम प्यार भाई चारे के पक्षपाती थे। उन्होने भारत को नई रोशनी दी नया मार्ग दिखाया।

भारत के प्रथम राष्ट्रपति—

डा० राजेन्द्र प्रसाद

स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद के नाम से ऐसा कौन होगा जो परिचित न हो। सारा देश उन्हें 'देश-रत्न' के नाम से पुकारता था। सादा जीवन और सरल स्वभाव के होने के साथ-साथ वे उच्च-विचार की साक्षात् मूर्ति थे। भारत को आजाद कराने मे आपका विशेष हाथ रहा। और जब तक वे भारत के राष्ट्रपति के पद पर आसीन रहे, अपना कर्त्तव्य पूरी तरह से निबाहते रहे।

डा० राजेन्द्रप्रसाद का जन्म बिहार प्रान्त के 'सारन' जिले मे जीरादेई नाम एक छोटे से गाव मे ३ दिसम्बर १८८४ को हुआ। आपके पिता का नाम श्री महादेवसहाय था। वे सरल स्वभाव के सादा व्यक्ति थे। प्रसिद्ध घराने मे जन्म लेने पर भी आपसे अहम् भाव कोसों दूर था। आपके पिता जी यूनानी चिकित्सा मे अधिक रुचि रखते थे। अत गरीबों की सहायता के लिए वे मुफ्त दवाई बांटा करते थे। उनकी दयालुता और गरीबों के प्रति सेवा-भाव का राजेन्द्रप्रसाद जी पर गहरा प्रभाव पड़ा।

अपने भाई बहिनों मे राजेन्द्र बाबू सबसे छोटे थे। छः या सात वर्ष की उम्र से उन्हें शिक्षा आरम्भ करने के लिए एक मौलवी साहब के पास भेजा गया। उन दिनों उर्दू का अधिक प्रचार था। अतः राजेन्द्र बाबू की शिक्षा का प्रारम्भ फारसी से हुआ। कुशाग्र बुद्धि का होने के कारण उन्हें सभी प्रेम करते थे।

खेलते। दसवी पास करने के बाद १९०१ ई० मे उन्हे कलकत्ता के प्रेजीडेन्सी कालेज मे दाखिल करा दिया गया। वही से एम० ए० की परीक्षा मे भी प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण हुए और शिक्षा समाप्त करने के बाद राजेन्द्र बाबू ने वकालत पास करने का निर्णय किया।

बारह वर्ष की आयु मे जब राजेन्द्र बाबू पाँचवी कक्षा मे पढ़ते थे उनका विवाह बलिया जिले के दलन छपरा नामक गाँव के एक रईस की सुपुत्री से हुआ। आपके ससुर बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति थे। एम० ए० पास करने के बाद उन्होने वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण की और कलकत्ता के हाई कोर्ट मे वकालत शुरू की। उन्ही दिनो राजेन्द्र बाबू का नाम दूर-दूर तक मशहूर हो गया। क्योकि गरीबो की सहायता करने मे वे सदैव आगे रहते थे। यहाँ तक कि कभी कुछ हानि भी उठानी पडती तो भी कोई परवाह न किया करते। अन्य बैरिस्टरो की तरह चापलूसी करना उन्हे अच्छा न लगता था। अत हर मुकदमे की पैरवी के लिए वे बडी तैयारी किया करते। आपकी वकालत खूब चली। उन्ही दिनो आपकी माता का देहान्त हो गया जिसका आपको बहुत दु ख हुआ और जब १९१६ के बाद पटना मे हाई-कोर्ट खुला आप कलकत्ता छोड पटना आकर वकालत करने लगे।

उन दिनो बिहार प्रान्त के चम्पारन जिले मे अग्रेज वहाँ के किसानो पर अत्याचार कर रहे थे। उनसे तग आकर वहाँ के नेताओ ने गाँधीजी से भेट की। उन दिनो गाँधीजी कलकत्ता मे थे। अग्रेजो के इतने अत्याचार को देख उन्होने बिहार जाना निश्चित किया और वही राजकुमार शुक्ल के माध्यम से राजेन्द्र बाबू का परिचय गाँधीजी से हुआ। गाँधीजी ने अग्रेजो के विरुद्ध किसानो के त्राण के लिए जो भी कदम उठाया राजेन्द्र

बाबू ने उसमे पूर्ण सहयोग दिया। १९१७ मे चम्पारन के सत्या-ग्रह मे भाग लेने के बाद आप गाधीजी के साथ 'साबरमती' आश्रम पहुँचे और आप गाधीजी के साथ रहे।

सन् १९१४ मे अंग्रेजो ने भारत मे क्रान्तिकारियो का दमन करने के लिए 'रौलट कानून' लागू कर दिया। यह कानून भार-तीयो के लिए अपमानजनक था। भारत के कोने-कोने मे उसका विरोध हुआ। उन्ही दिनो राजेन्द्र बाबू वकालत को छोडकर क्रान्ति की आग मे कूद पडे। देश-सेवा का व्रत धारण कर उन्होने जी-जान से क्रान्ति मे भाग लेना आरम्भ कर दिया।

गाधीजी के अनुयायी राजेन्द्र बाबू ने जगह-जगह अंग्रेजो के खिलाफ प्रदर्शन किये। गांव गांव मे चर्खा चलाकर विदेशी वस्त्रो का बायकाट किया। 'तिलक स्वराज्य फंड' के लिए काफी धन एकत्र करने मे राजेन्द्र बाबू का हाथ था। यहां तक की बिहार मे गाधीजी के आन्दोलन को जो सफलता मिली उसका श्रेय राजेन्द्र बाबू को ही है।

असहयोग आन्दोलन समाप्त हुआ। क्रान्ति जोरो पर थी। इन दिनो गाधीजी को गिरफ्तार कर के गोरी सरकार ने उन्हे छ वर्ष के कारावास का दण्ड सुना दिया। जेल जाते समय उन्होने सभी देश-भक्तो को आन्दोलन जारी रखने का आदेश दिया।

लोगो का उत्साह बढ़ाया। इसका यह प्रभाव पड़ा कि वहाँ के लोगो मे नई स्फूर्ति ने जन्म लिया। अंग्रेजो का डटकर मुकाबला करने के लिए जनता तैयार हो गई। जगह-जगह तिरंगे झन्डे नील गगन मे लहराने लगे।

सन् १९२४ मे गांधीजी को जेल से रिहा कर दिया गया। गांधीजी ने बाहर आकर देखा, सभी नेता अपने कार्य मे उसी प्रकार लगे हुए है। राजेन्द्र बाबू ने जो कार्य करके दिखाया उससे गांधीजी के हृदय मे उन्होने विशेष स्थान बना लिया था। उन्ही दिनो पटना के म्युनिसिपल बोर्ड का चुनाव हुआ। उसमे राजेन्द्र बाबू को सभापति पद पर नियुक्त कर दिया गया। उस पद पर रहते हुए उन्होने पूरी लगन तथा साहस से काम किया।

वर्ष भर तक सभापति रहने के बाद राजेन्द्र बाबू ने सभापति पद से त्याग पत्र दे दिया। क्योकि वे वहाँ रहकर अपने आपको जनता की सेवा करने मे असमर्थ समझते थे। उन्ही दिनो हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन कोकनाडा मे हुआ। कोकनाडा मद्रास का एक नगर है। उस अधिवेशन मे राजेन्द्र बाबू को ही सभापति पद के लिए चुना गया।

राजेन्द्र बाबू इसी प्रकार कई संस्थाओ के सभापति बने। यह उनकी योग्यता और देश सेवा का ही परिणाम था।

राजेन्द्र बाबू कहने से अधिक करने मे विश्वास रखते थे। इसीलिए जिस कार्य को हाथ मे लेते उसे पूरी लगन से निभाते थे।

आप १९२७ मे लंका की यात्रा पर गये। उसके बाद मार्च सन् १९२८ मे आपको किसी मुकदमे के सिलसिले मे इंग्लैण्ड जाना पड़ा। मुकदमा समाप्त होने के बाद आपने यूरोप का भ्रमण किया। आस्ट्रिया मे आपका भव्य स्वागत हुआ क्योकि आपको वहां के लोग गांधीजी का शिष्य कहकर पुकारते थे। वहाँ की जनता के हृदय मे स्थान बना कर आप आस्ट्रिया, स्विट्-

इग्लैड गये और इटली व जर्मनी की सैर करते हुए आपने लोगो के हृदय मे जो स्थान बनाया वह भारतीयो के लिए हितकारी रहा।

भारत आने पर आपको जब मालूम हुआ कि अग्रेजो ने साइमन कमीशन बुलाया है और काग्रेस ने उनका बायकाट करने का निर्णय कर लिया है तो उन्हे प्रसन्नता हुई। वे चाहते थे कि भारतमाता के पैरो से गुलामी की जजीरे काट कर ही दम ले। देश को स्वतन्त्र कराना उनका लक्ष्य बना हुआ था जो पग-पग पर उन्हे प्रेरणा दे रहा था।

जब साइमन कमीशन पटना आया, राजेन्द्र बाबू ने तीन हजार लोगो के विशाल जुलूस के साथ काले झडे दिखाकर उसका विरोध किया। इसके बाद सन् १९३० मे साबरमती आश्रम जाकर बापू गाधी जी से मिले और उन्हे स्थिति से अवगत करा कर कुछ नवीन स्फूर्ति लाने पर विचार-विमर्श किया।

निकला और गांधीजी के भारत लौटने पर क्रान्ति का रंग और तेज हो गया। जगह-जगह गिरफ्तारियाँ होने लगी। अंग्रेजो के बढ़ते कठोर व्यवहार को देखकर 'सदाकत आश्रम' में कांग्रेसी नेताओं की गुप्त सभा हुई। लेकिन सभा पूर्ण न हो पाई। उससे पहले कि किसी परिणाम तक वे पहुँचते अचानक पुलिस ने छापा मार कर सभी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। उसमें सभी को छः महीने की सजा सुनाई गई।

इस प्रकार कितनी बार राजेन्द्र बाबू को जेल यात्राएँ करनी पड़ी। लेकिन आपने हिम्मत न हारी।

क्रान्ति का रूप भयंकर होता गया। सभी जी-जान से भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए लड़ रहे थे। सन् १९४३ में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन हुआ उसमें राजेन्द्र बाबू को सभापति नियुक्त किया गया। यह अधिवेशन बम्बई में हुआ जहाँ राजेन्द्र बाबू का भव्य स्वागत किया गया। बम्बई का अधिवेशन समाप्त होने पर आपने असेम्बली के चुनाव के विषय में प्रचार किया। हिन्दु मुस्लिम एकता पर आपने बल दिया। श्री मुहम्मद अली जिन्ना से भेंट करके आपने हिन्दु-मुस्लिम एकता पर बल दिया लेकिन इस कार्य में आपको सफलता न मिली क्योंकि मि० जिन्ना पाकिस्तान बनवाने के स्वप्न देख रहे थे। फिर भी आप अपने कार्य में लगे रहे।

उधर सुभाषचन्द्र बोस ने अंग्रेजों को यह दिखा दिया था कि भारत के वीर अपनी मातृभूमि को स्वतन्त्र करा कर ही रहेंगे। कई देश-भक्त फांसी के तख्त पर झूल चुके थे।

आखिर १५ अगस्त १९४७ को भारत स्वतन्त्र हुआ। पहले [illegible] फिर राजेन्द्र बाबू को स्वतन्त्र भारत का प्रथम राष्ट्रपति नियुक्त किया गया। २६ जनवरी १९५० से भारत का

संविधान लागू कर दिया गया और भारत पूर्ण रूप से स्वतन्त्र हो गया।

प्रथम बार राष्ट्रपति बनने के बाद राजेन्द्र बाबू ने निस्वार्थ भाव से देश की सेवा की। इसी के परिणाम स्वरूप सन् १९५७ मे आपको फिर से भारत का राष्ट्रपति चुना गया। राष्ट्रपति के रूप मे आपने अपना सारा समय जन-सेवा मे लगाया।

स्वास्थ्य गिरने लगा लेकिन उसकी भी परवाह न करके आप देश सेवा मे रत रहे। बारह वर्ष तक राष्ट्रपति पद पर आसीन रहने के बाद सन् १९६२ मे पद से मुक्त होकर आप पटना चले गए। वहाँ पर भी आप मौन न रहे बल्कि सदाकत आश्रम मे रहकर देश सेवा करते रहे और वही रहते हुए देश-सेवा मे लीन राजेन्द्र बाबू का २८ फरवरी, १९६३ को स्वर्गवास हो गया। एक महान् आत्मा हम से जुदा हो गई। लेकिन आज भी उनकी याद प्रत्येक भारतीय मे उसी तरह स्थाई है। भारत का कोटि-कोटि जन-मन उनकी सादगी और देश सेवा से सदैव प्रेरणा लेता रहेगा।

●

सर्वपल्ली डा० राधाकृष्णन्

भारतीय संस्कृति और मानवता के पुजारी उच्चकोटि के विद्वान्, वक्ता एवं महान् दार्शनिक सर्वपल्ली डा० राधाकृष्णन् से ऐसा कौन व्यक्ति होगा जो परिचित न हो। आप हमारे स्वतन्त्र भारत के द्वितीय राष्ट्रपति रहे हैं।

डा० राधाकृष्णन् का जन्म आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले के शैव-तीर्थ तिरुत्तनी नामक गांव में ५ सितम्बर सन् १८८८ को हुआ था। आपके माता-पिता धर्मनिष्ठ हिन्दू थे। धर्म में पूर्णतया आस्था रखने के परिणाम स्वरूप आप पर भी उनका गहरा प्रभाव पड़ा।

आरम्भ में आपकी शिक्षा गांव के निकट की पाठशाला में हुई। उस ज़माने में आज की तरह जगह-जगह स्कूल न थे। अतः अपनी प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त कर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए आपको मद्रास के क्रिश्चियन कॉलेज तथा वेल्लूर के वूरहीज कालेज में प्रविष्ट कराया गया। वहां अपनी लगन से आपने प्रथम श्रेणी में परीक्षायें उत्तीर्ण की।

आपका ध्यान धार्मिकता की ओर अधिक रहा। जहां भी कोई उपदेश होता आप उसे अवश्य सुनते। उन्हीं का प्रभाव यह पड़ा कि दर्शन-शास्त्र में आपने एम० ए० की परीक्षा पास की।

आप प्रत्येक विषय पर गहराई से मनन करते और जब

तक किसी परिणाम पर न पहुँचते उसे न छोडते थे। एम० ए० पास करने के वाद आपको मद्रास प्रेसीडेसी कॉलिज मे दर्शन-शास्त्र के प्राध्यापक के स्थान पर नियुक्त कर दिया गया। वहाँ पर आपने रवीन्द्रनाथ ठाकुर की रचनाओ का पूर्णरूप से अध्ययन किया।

सन् १९१८ मे आपने रवीन्द्रनाथ ठाकुर की रचनाओ का अध्ययन करने के वाद 'दि फिलॉसफी ऑफ रवीन्द्रनाथ टैगोर' नामक पुस्तक की रचना की। उसके कुछ समय वाद सन् १९१८ मे ही आप मैसूर विश्वविद्यालय के अध्यक्ष वनें। वहाँ आपने अपनी योग्यता का परिचय वहुत ही सुन्दर तरीके से दिया। यहाँ तक कि आपके प्रति प्रत्येक छात्र मे स्नेह और

सम्मान की भावना उत्पन्न हो गई। आप भी छात्रो से स्नेह करते थे।

आपने सन् १६२० मे 'दि रेन ऑफ रिलीजन इन कटेम्पोरेरी फिलॉसफी' नामक पुस्तक की रचना की। उस पुस्तक का प्रभाव विदेशियो पर भी पडा। आपकी चर्चा दूर-दूर तक होने लगी। आपकी विद्वत्ता की लोग दाद देने लगे। उसीसे प्रभावित होकर मद्रास सरकार ने आपको शिक्षा-सेवा मे उच्च पद प्रदान कर सम्मानित किया। आपने हर शास्त्र का गूढ अध्ययन किया और अन्य कृतियाँ आपने लिखी। उसके बाद कलकत्ता विश्वविद्यालय मे सम्मानित पद पर आपको नियुक्त कर दिया गया।

दर्शन-शास्त्र मे आपकी धाक थी। बडे-बडे विद्वान आपके सामने सिर झुकाने लगे और उनमे जो दर्शन-शास्त्र के प्रति रुचि उत्पन्न हुई वह थी आप द्वारा लिखी विशेष पुस्तक 'भारतीय दर्शन'। इस पुस्तक का विद्वानो पर गहरा प्रभाव पडा। और आक्सफोर्ड मे आयोजित 'अप्टन भाषण-माला' की प्रतियोगिता मे आपके भाषणो की प्रशसा की गई। उसी के फलस्वरूप आपको अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति मिली।

ब्रिटिश सरकार ने आपकी विद्वता देखकर 'सर' की उपाधि से आपको सम्मानित किया। आन्ध्र विश्वविद्यालय ने आपको डी० लिट्० की उपाधि प्रदान की।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय जो एक राष्ट्रीय सस्था थी उसके आप उप-कुलपति रहे। शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र मे आप अपना कार्य पूर्णतया निभाते रहे। राष्ट्रसघ के 'यूनेस्को' की कार्यकारिणी के आप सदस्य रहे है।

शिक्षा क्षेत्र मे प्रगति करते हुए सन् १६४६ मे आपको रूस मे भारत की ओर से राजदूत नियुक्त किया गया। उस समय

वहा के मार्शल स्टालिन आपसे अत्यधिक प्रभावित हुए थे।

भारत स्वतन्त्र हुआ और उसके बाद २६ जनवरी १९५० को जब भारत को पूर्णरूप से गणराज्य घोषित किया गया डा० राजेन्द्रप्रसाद राष्ट्रपति बने और आपको उप-राष्ट्रपति के पद पर आसीन हुए।

उपराष्ट्रपति के पद पर रहते हुए आपने अपने देश व अपनी प्रिय जनता की भलाई के लिए कार्य किये। आप राज्यसभा के अध्यक्ष भी रहे। बारह वर्ष तक उपराष्ट्रपति पद पर रहने के बाद सन् १९६२ मे डा० राजेन्द्रप्रसाद के राष्ट्रपति पद से अवकाश ग्रहण करने के बाद आपको राष्ट्रपति पद से सुशोभित किया गया।

आपने राष्ट्रपति पद पद आसीन होने के बाद भी अपने कर्त्तव्य को अच्छी तरह निबाहा। स्वतन्त्र भारत के राष्ट्रपति होने के नाते ही नही बल्कि आपकी विद्वता के कारण समस्त विश्व आपको श्रद्धा की दृष्टि से देखता है।

पाँच वर्ष तक आप राष्ट्रपति पद पर आसीन रहे। सन् १९६७ मे आपने इस पद से अवकाश ग्रहण कर लिया।

जब तक आप राष्ट्रपति पद पर रहे आपने सादा जीवन व्यतीत किया और आज भी आप सरल स्वभाव तथा सादी वेश-भूषा के साथ विशुद्ध भारतीय है। आप महान् विचारक कुशल शासक है। आपका व्यक्तित्व आपकी रचनाओ, भाषणो मे स्पष्ट झलकता है।

भारतीय सस्कृति और सस्कृत भाषा से आपको अधिक प्रेम है। आपने प्रत्येक भारतीय के हृदय मे सच्ची देश-भक्ति की भावना उत्पन्न करने का भरसक प्रयत्न किया है। आज भी आप अवकाश ग्रहण करने पर देश-सेवा और भारतीय सस्कृति के प्रसार मे अपना पूर्ण योग प्रदान कर रहे हैं।

भगवान से प्रार्थना है हम सभी भारतीयो की कि आप चिरायु हो और इसी प्रकार भारतीय जनता का चिरकाल तक आप मार्ग-दर्शन करते रहे ।

वच्चो ! तुम्हे भी इन महान् दार्शनिक के जीवन से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए ताकि अपने देश, सस्कृति की तुम भी तन-मन-धन से सेवा करने मे पीछे न रह सको ।

भारत के तृतीय राष्ट्रपति

डा० ज़ाकिर हुसैन
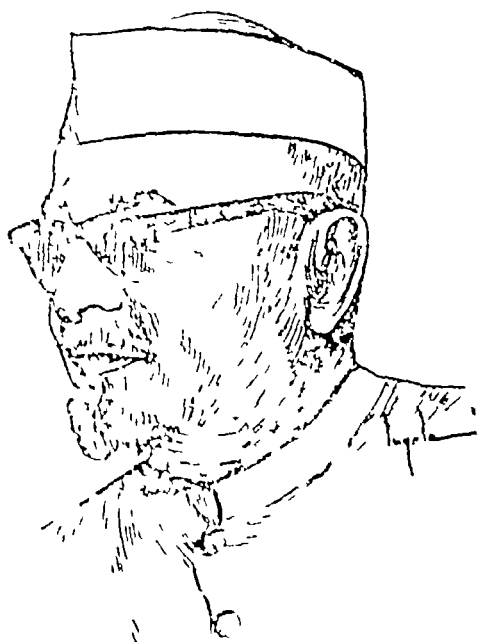
डॉक्टर ज़ाकिर हुसैन भारत के तृतीय राष्ट्रपति हैं। जिस प्रकार स्वर्गीय डॉ० राजेन्द्र प्रसाद और अवकाश प्राप्त द्वितीय राष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉ० राधाकृष्णन् ने स्वतन्त्र भारत के राष्ट्रपति के पद पर आसीन रह कर देश का नाम विश्व मे उज्ज्वल

किया है उसी प्रकार अब डॉ० जाकिर हुसैन अपने देश का गौरव बढा रहे हैं ।

डॉ० जाकिर हुसैन का जन्म हैदरावाद मे सन् १८९७ मे हुआ। आपके पिता कायमगज उत्तर प्रदेश के रहने वाले थे। हैदरावाद मे वे वकालत करते थे। कुछ समय तक हैदरावाद मे रहने के वाद अपने परिवार सहित आपको अपने पूवर्जो के स्थान कायमगज वापिस लौट आना पडा। क्योकि लम्बी वीमारी के कारण आपके पिता का हैदरावाद मे देहान्त हो गया था। वह समय आपके लिए दुखदाई रहा।

वचपन वीता और सन् १९०७ मे आपको इटावा के इस्लामिया हाई स्कूल मे प्रविष्ट करा दिया गया। आप आरम्भ से ही पढने मे अत्यधिक रुचि रखते थे। हाई स्कूल मे वडी मेहनत से आपने शिक्षा ग्रहण की और १६ वर्ष की आयु मे हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण कर आप अलीगढ चले आये। उच्च शिक्षा ग्रहण करने की भावना से आपने अलीगढ के एम० ए० ओ० कॉलिज मे दाखिला ले लिया और आपकी शिक्षा का कार्य सुचारु रूप से चलने लगा।

सन् १९१८ मे आपने प्रयाग विश्वविद्यालय से वी० ए० की परीक्षा पास की और उसके दो वर्ष वाद आप एम० ए० की परीक्षा मे उत्तीर्ण हुए।

उन्ही दिनो राज द्वारा चलाये गये विद्यालयो का गाधीजी विरोध कर रहे थे। गाधीजी की अपील पर आपने राज द्वारा चलाये गये विद्यालयो का वायकाट किया। उसके वाद आप अलीगट मे राष्ट्रीय कॉलेज जामिया मिलिया इस्लामिया मे अध्यापक नियुक्त हुए। वहाँ आपको वहुत थोडा वेतन मिला। आप उससे भी प्रसन्न थे।

कुछ समय वाद यानि सन् १९२२ मे उच्चशिक्षा ग्रहण करने

के लिए आप ब्रिटेन के लिए रवाना हो गये। ब्रिटेन जाते समय रास्ते मे आप इटली और जर्मनी चले गये। वहाँ आपने अर्थ-शास्त्र मे डॉक्टरेट की उपाधि लेकर आप भारत वापिस लौट आये।

भारत वापिस लौटने पर जामिया मिलिया कॉलेज के आप उपकुलपति नियुक्त कर दिये गये। उस समय आपकी आयु तीस वर्ष की थी। आपकी योग्यता व मानवता से सभी प्रभावित थे। शिक्षा के क्षेत्र मे आपने विशेष सफलता प्राप्त की।

बाईस वर्ष तक आप जामिया मिलिया के उपकुलपति के पद पर आसीन रहे। आप शिक्षा-क्षेत्र मे अपना कर्त्तव्य पूरी निष्ठा से निभाते रहे। इससे आपकी प्रशसा दूर-दूर तक होने लगी।

सन् १९३८ की बात है। गाधीजी नयी तालीम की योजना बनाने मे लगे थे। वे चाहते थे कि देश मे ऐसी शिक्षा का प्रचार हो जिससे देश के भावि नागरिको मे देश के प्रति अद्भुत भावना उत्पन्न हो सके। जब गाधीजी को आप द्वारा शिक्षा मे सहयोग देने की भावना का पता लगा वे अति प्रसन्न हुए और उन्होने आपसे प्रभावित होकर नई तालीम की योजना बनाने वाली कमेटी का आप को अध्यक्ष नियुक्त कर दिया। आप बडी लगन से उस क्षेत्र मे कार्य करने लगे। आपके कार्य को देखकर गाधी जी अत्यन्त प्रसन्न हुए और उनके हृदय मे आपने विशेष स्थान बना लिया।

आपकी योग्यता, कर्मनिष्ठा और लगन के परिणाम स्व-रूप अलीगढ विश्वविद्यालय का आपको उपकुलपति नियुक्त कर दिया गया। सन् १९५६ तक अलीगढ विश्वविद्यालय के उप-कुलपति रहने के बाद आपको राज्यपाल बनाकर बिहार भेज दिया गया। वही से आप राजनैतिक क्षेत्र मे पदार्पण किया।

सन १९६२ मे डॉ० राधाकृष्णन् उपराष्ट्रपति पद से राष्ट्र-पति चुन लिये गये। इस पद पर आपने अपना कर्त्तव्य सच्ची लगन से निबाहा। देश के प्रति आपमे उच्च भावना व स्नेह देख भारतीय जनता आपकी ओर आकृष्ट हो गई।

पाँच वर्ष तक उपराष्ट्रपति पद पर आसीन रहने के बाद १९६७ मे आप भारत के राष्ट्रपति चुने गये। तब से अब तक आप स्वतन्त्र भारत के सम्माननीय राष्ट्रपति पद पर आसीन है।

डॉ० ज़ाकिर हुसैन एक महान् शिक्षा-शास्त्री, सफल प्रशा-सक राष्ट्रवादी तथा सरल स्वाभव के पुरुष हैं। इनमे राष्ट्रीय भावना कूट-कूट कर भरी है। मुसलमान होते हुए भी आप भारतीय पहले है और मुसलमान बाद मे। मुस्लिम साम्प्रदा-यिकता से आप हमेशा अलग रहे है। गाधीजी के आप सच्चे भक्तो मे से रहे। यही कारण था कि गाधीजी तथा स्वर्गीय प० जवाहर लाल नेहरू के हृदय मे आपके प्रति उच्च सम्मान था।

एक बार की घटना है। सन् १९४७ मे देश मे विभाजन के बाद साम्प्रदायिक झगडे हो रहे थे। पाकिस्तान बनने के कारण जाने कितने घर उजड गये थे। परस्पर हिन्दु-मुसलमानो मे सुलग रही साम्प्रदायिकता की आग ने उग्र रूप धारण कर लिया था। उन्ही दिनो जामिया मिलिया मे आपका जीवन खतरे मे थे। जब नेहरू जी को ज्ञात हुआ वे स्वय रात के समय जामिया मिलिया पहुँचे और उन्होने आपके प्राणो की रक्षा की।

आप उदार राष्ट्रवादी विचारधारा के युग-पुरुप है। सभी को आप एक ही दृष्टि से देखते हैं। आपका मत है कि देश मे सत्य का शासन हो। सभी के साथ न्याय हो और गरीब-अमीर का भेद भाव समाप्त हो।

आपमे राष्ट्र के प्रति उच्च भावना कूट-कूटकर भरी है।

मुसलमान होते हुए भी आप एक हिन्दू राष्ट्र के राष्ट्रपति है। आप पारस्परिक भेद-भाव से अछूते हैं यही कारण है आज भारत के प्रत्येक नागरिक के हृदय मे आपके प्रति स्नेह, विश्वास और सम्मान की भावना उत्तरोत्तर बनी हुई है। यह आपके लिए ही नही बल्कि समस्त राष्ट्र के लिए गर्व की बात है।

धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र भारत के राष्ट्रपति पद पर रहते हुए आप इस महान् राष्ट्र का गौरव बढा रहे हैं। बच्चो! तुम्हें भी अपने देश के राष्ट्रपति आदरणीय डा० ज़ाकिर हुसैन की भाति पारस्परिक भेद-भाव मिटा कर राष्ट्र का गौरव बढाना चाहिए।

●

भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री

पं० जवाहरलाल नेहरू

यह चित्र देखकर राष्ट्रनायक जवाहरलाल नेहरू की याद ताजा हो जाती है। बच्चो! यही तो है 'तुम्हारे चाचा नेहरु' जिन्होने अपने देश भारत को स्वतन्त्र कराने मे अपना सर्वस्व त्याग दिया और स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री के पद पर कार्य करते हुए विश्व भर मे राष्ट्र का मस्तक उन्नत किया है।

बच्चो! हर वर्ष 'चाचा नेहरू' का जन्म दिवस नई दिल्ली के नेशनल स्टेडियम मे मनाया जाता है। इससे तुम यह जान गये होगे, चाचा नेहरू बच्चो से कितना प्यार करते थे।

इन्ही चाचा नेहरू का जन्म १४ नवम्बर १८८९ मे उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद नगर मे हुआ था। इनके पिताजी का नाम श्री मोतीलाल नेहरु था। वे अपने समय के सुप्रसिद्ध वकील रहे हैं। अग्रेजो पर उनकी धाक थी। इनकी माता का नाम स्वरुप रानी था। वह योग्य तथा उच्च विचारो की नारी थी।

वैसे श्री मोतीलाल नेहरु कश्मीरी ब्राह्मण थे। इनके पूर्वज काश्मीर से इलाहाबाद आकर रहने लगे थे। सुप्रसिद्ध एव प्रतिष्ठित वकील श्री मोतीलाल पर सरस्वती और लक्ष्मी दोनो की असीम कृपा थी। अत वे राजा-महाराजाओ की तरह जीवन व्यतीत करते थे।

प० जवाहरलाल नेहरु सर्वसुख सम्पन्न थे। दो बहने और थी। एक विजय लक्ष्मी तथा दूसरी का नाम कृष्णा देवी है।

मोतीलाल नेहरू अपने बच्चो से अगाध स्नेह करते थे। वे चाहते थे कि उनकी संतान उन्ही की तरह योग्य बने। अत. उन्होने बच्चो की शिक्षा पर सुचारुरूप से ध्यान दिया।

नेहरू जी की शिक्षा का प्रबन्ध बहुत ही सुन्दर ढग से किया गया। प्रारम्भ मे इन्हे घर पर ही शिक्षा दी गई। बाल्य अवस्था मे नेहरू जी अपने पिता के साथ विलायत गए और वही इगलैंड के प्रसिद्ध हैरो स्कूल मे वे प्रविष्ट हुए। उस समय उनकी आयु पन्द्रह वर्ष की थी।

वहाँ रहकर इन्होने उच्च शिक्षा ग्रहण की। कैम्ब्रिज विश्व-विद्यालय तथा ट्रिनिटी कॉलिज से उन्होने बी० ए० तथा बैरि-

स्टरी की परीक्षा उत्तीर्ण की। वहां इनकी धाक थी। कॉलिज मे पढते हुए भी इन्हे सभी आदर की दृष्टि से देखते थे। राजाओ की तरह ठाठ-बाट, यह सब पिता के धनिक होने का परिणाम था।

शिक्षा समाप्त करने के बाद जवाहरलाल नेहरू सन् १९१२ मे स्वदेश लौटे। मोतीलाल नेहरू चाहते थे कि उनका पुत्र उन्ही की तरह यशस्वी वकील बने इसलिए विदेश से लौटकर पिता की आज्ञानुसार नेहरू जी ने वकालत शुरु की, किन्तु इसमें उनका मन न लगा।

कुछ समय तक वकालत करते रहे। इसी बीच सन् १९१६ में नेहरू जी का विवाह कमला जी से हो गया।

शादी के बाद नेहरू जी का मन वकालत से ऊब गया। एक ओर जहाँ वे अपनी पत्नी से अत्यधिक प्रेम करते थे। दूसरी ओर उनके मस्तिक मे भारत की परतन्त्रता की तस्वीर खिंच जाती थी। विदेश मे रहते हुए उन्होने अपने देश की परतन्त्रता और गरीबी का अनुभव किया था। वही विचार उन्हे क्रान्ति के सग्राम मे कूद पडने के लिए विवश कर रहा था।

जब भारत आकर नेहरू जी ने अग्रेजो के अत्याचार देखे तभी से वे चाहते थे कि हमारा देश स्वतन्त्र होना चाहिए। जब गाधीजी दक्षिण अफ्रीका का दौरा करके भारत लौटे तो लखनऊ मे नेहरू उनके सम्पर्क मे आये। उन्ही दिनो बसत पचमी के रोज नेहरू जी का विवाह हुआ था। गाधीजी ने नेहरू जी के देश के प्रति उच्च भावना देखी तो बहुत प्रसन्न हुए।

प्रथम विश्व-युद्ध के पश्चात् अग्रेजी सरकार ने भारतीयो पर 'रौलेट कानून' लागू कर दिया। इसी बीच पजाब मे भयकर घटनाओ ने जन्म लिया। जलिया वाला बाग मे गोरी सरकार ने भारतीयो पर गोलिया चलाईं। उस गोली काण्ड

ग्रौर उनके वर्बरतापूर्ण ग्रमानुषिक ग्रत्याचारो ने नेहरू जी के हृदय मे भीषण तूफान खडा कर दिया। उनमे देश-सेवा की भावना प्रवल हो गई।

गाधीजी से जब उन्होने कहा तो उन्होने सहर्ष उन्हे ग्राशीर्वाद दिया। उसी के फलस्वरूप सब ठाठ-बाट त्यागकर नेहरूजी ग्रग्रेजो के खिलाफ देश को स्वतन्त्र कराने वाली क्रान्ति मे कूद पडे। उन्होने विदेशी वस्त्रो का त्याग कर दिया ग्रौर स्वदेशी वस्त्रो को गले से लगा लिया।

जगह-जगह ग्रगेजो के ग्रत्याचार वढते जा रहे थे। क्रान्तिकारियो के साथ वे ग्रपमानजनक व्यवहार कर रहे थे। नेहरू जी ने ग्रन्य नेताग्रो के साथ मिलकर ग्रग्रेजो के खिलाफ ग्रावाज उठाई।

उन्ही दिनो इग्लैंड से जब युवराज भारत ग्राया कांग्रेस ने उसका ग्रपमान किया। उसमे मोतीलाल नेहरू व उनके सुपुत्र जवाहरलाल जी भी शामिल थे। युवराज का विरोध करने के ग्रभियोग मे पिता-पुत्र दोनो को ही ग्रग्रेजो ने गिरफ्तार कर लिया। इनकी गिरफ्तारी से ग्रान्दोलन की ज्वाला ग्रौर भभक गई।

क्रान्ति की ग्राग चेतन होती जा रही थी। गाधीजी के साथ मिलकर ग्रन्य नेता जगह-जगह ग्रग्रेजी शासको के विरोध मे जुलूस निकाल रहे थे। सत्यागह कर रहे थे। दूसरी ग्रोर गर्म दल के नेता ग्रगेजी ग्रफसरो को मौत के घाट उतार रहे थे। सरदार भगतसिह, चन्द्रशेखर ग्राजाद, सुभाषचन्द्र वोस ग्रादि नेताग्रो ने देश को स्वतन्त्र कराने का वीडा पूर्ण रूप से उठा लिया था। सुभाषचन्द्र वोस ने तो यहां तक कहा था–'तुम मुझे खून दो, मै तुम्हे ग्राजादी दूंगा।'

किन्तु गाधी के साथ मिलकर प० जवाहरलाल नेहरू ग्रादि

नेतागण शान्ति एव अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए भारत को स्वतन्त्र कराना चाहते थे।

सन् १६२६ मे जगह-जगह घटनाये घट रही थीं। उधर कमला नेहरू का स्वास्थ्य दिन-प्रति-दिन गिरने लगा था। डाक्टरो ने नेहरू जी को अपनी पुत्री इन्दिरा तथा बहन विजय-लक्ष्मी के साथ कमला को योरुप ले जाने की सलाह दी। नेहरू जी पत्नी की बिगडती दशा को देखकर उसे योरुप ले गये।

योरुप से लौट आने पर नेहरू जी ने छात्रो और मजदूरो को सगठित किया। साइमन कमीशन का विरोध करते हुए भारत माँ के कई लाल अग्रेजो की गोलियो का शिकार हो गये। लेकिन मौत से घबरा कर वीर कभी पीछे नही हटते। 'जयहिन्द' का नारा लगाते हुए भारत माँ के अन्य सपूतो ने तिरगे को भुकने नही दिया।

सन् १६२६ मे लाहौर मे लाखो लोगो ने स्वतन्त्रता प्राप्ति का प्रस्ताव पास किया। नेहरू जी को फिर से गिरफ्तार कर लिया गया।

जब नेहरू जी जेल से छूटकर आये इनके पिता श्री मोती-लाल नेहरू का स्वास्थ्य खराब था। कुछ दिनो बाद उनका स्वर्गवास हो गया। नेहरू जी को पिता की मृत्यु से गहरा धक्का लगा। देश भर मे शोक छा गया फिर भी नेहरू जी अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए लड़ाई लडते ही रहे।

सन् १६२६ मे ही नेहरू जी को कांग्रेस का प्रधान चुन लिया गया। नेहरू जी ने जगह-जगह भाषण किए। सोई हुई जनता को जगाया और उनमे नई स्फूर्ति का सचार किया।

अग्रेजो की सरकार ने 'आनन्द-भवन' जो नेहरू जी का घर था, और इलाहाबाद मे है, पर अपना अधिकार कर लिया। नेहरू जी ने इसकी भी कोई परवाह न की।

इनकी माता को भी जेल यात्रा करनी पडी थी। यहाँ तक कि योरुप जाने से पूर्व इनकी पत्नी कमला नेहरू भी कई बार जेल गईं। इसी प्रकार इनका समस्त परिवार क्रान्तिकारी हो चुका था। सबका ध्येय यही था—भारत को आजादी मिले।

जिन दिनो नेहरू जी जेल मे थे उनकी पत्नी का स्वास्थ्य बिगड चुका था। जब नेहरू जी को पत्नी की दशा के विषय मे ज्ञात हुआ उन्होने सरकार से योरुप जाने की आज्ञा माँगी। नेहरू जी को छोड दिया गया। जेल से छूट कर नेहरू जी विमान द्वारा कमला के पास पहुँचे। उसकी दशा देख उन्हे बहुत दु ख हुआ। भगवान की इच्छा, कुछ दिनो बाद कमला ससार से विदा हो गई। पत्नी की मृत्यु का नेहरू जी को अति दु ख हुआ। अपनी प्रिय पत्नी के फूल लेकर वे भारत आये और त्रिवेणी मे एक विशाल जनसमूह के साथ उन्होने पत्नी के फूलो को सगम मे प्रवाहित कर दिया। अभी पत्नी का दु ख वे भूले ही न थे कि १९३८ मे इनकी माता भी चल बसी।

माता-पिता और पत्नी की मृत्यु का दु ख सहन करते हुए नेहरू जी आन्दोलन मे निरन्तर भाग लेते रहे। क्रान्ति उग्ररूप धारण कर गई। अग्रेजो के पैर डगमगाये और पन्द्रह अगस्त १९४७ को उन्होने देश का बँटवारा करके भारत को स्वतन्त्र घोषित कर दिया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ ही पहले प० जवाहरलाल नेहरू अन्तरिम सरकार के तथा बाद मे स्थायी रूप से भारत के प्रधानमन्त्री नियुक्त हुए। स्वतन्त्र भारत के ये प्रथम प्रधान-मन्त्री बने।

प्रधानमन्त्री बनने के बाद नेहरू जी ने विश्व के सभी राष्ट्रो से मित्रता स्थापित करने का कदम उठाया। इसी उद्देश्य से उन्होने विदेशो का भ्रमण किया। अमरीका के राष्ट्रपति आइ-

जनहावर, रूस के प्रधानमन्त्री बुलगानिन तथा इग्लैण्ड की महारानी ने भारत का भ्रमण किया।

भारत को स्वतन्त्र कराने के बाद नेहरू जी ने इण्डोनेशिया, फारमूसा, अफ्रीका तथा अरब आदि मुल्को को स्वतन्त्र कराने मे पूरा सहयोग दिया।

नेहरू जी शान्तिप्रिय थे। सभी से प्यार करते थे। विशेष-कर समस्त विश्व के बच्चे तो उन्हे चाचा नेहरू के नाम से पुकारते थे।

राजनीति के अतिरिक्त समाज व साहित्य सेवा भी उनकी कम नही है। उन्होने 'भारत की कहानी' 'मेरी कहानी' नामक आदि प्रसिद्ध पुस्तकें लिखी।

आजीवन १८ व १९ घटे बैठकर उन्होने काम किया। उनका कहना था—'करने से मनुष्य को नया जीवन मिलता है। जो व्यक्ति गौर राष्ट्र करना नही जानते वे जीना भी नही जानते।'

सोलह या सत्तरह वर्षो तक निरन्तर भारत के प्रधानमन्त्री पद पर कार्य करते हुए २७ मई सन् १९६४ को हृदयगति रुक जाने से महान् आत्मा हमसे विदा हो गई। कैसा अभागा दिन था वह जिस दिन मृत्यु ने बच्चो से उनके प्रिय चाचा नेहरू को छीन लिया था। भारत की जनता का हृदय-सम्राट अपनी प्रिय जनता को बिलखता छोड़कर हमेशा-हमेशा के लिए चला गया।

नई दिल्ली के प्रधानमन्त्री निवास से [illegible] तक के मार्ग मे खड़े लाखो लोगो ने रो-रोकर प्रिय नेता को अन्तिम विदाई दी। उस समय लग रहा था मानो आसमान भी रो रहा हो।

यमुना के किनारे जहाँ आज कल शान्तिवन है, वहीं पर नेहरू जी के शव चन्दन की चिता मे रखकर दाह-संस्कार किया गया था। उस समय विश्व के अनेक नेताओ ने भारत

पाकर नेहरू जी को भावभरी श्रद्धाजलि पर्पित की थी।

प्राज नेहरू जी हमारे बीच नही है लेकिन कोटि-कोटि जन उन्हे कभी नही भूल सकता। जब तक चाँद प्रौर सितारे विद्यमान है नेहरू जी का नाम उन्ही की तरह चमकता रहेगा।

●

भारत के द्वितीय प्रधानमंत्री

स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्री

बच्चो ! इस चित्र को तुम अच्छी तरह पहचानते होगे। यह चित्र हमारे देश के द्वितीय प्रधानमन्त्री स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्री का है। इन्होने स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू जी के बाद भारत के प्रधानमन्त्री का पद संभाला था और अन्तिम दम तक देश की सेवा मे लीन रहे।

लालबहादुर शास्त्री कर्मठ, शौर्यवान, लोकप्रिय नेता व भारतीय सस्कृति की जीती जागती मूर्ति थे। इनका जन्म सन् १६०४ मे उत्तर प्रदेश के मुगलसराय के कायस्थ परिवार मे हुआ। इनके पिता का नाम मुन्शी द्वारकाप्रसाद था। वे बडे सरल स्वभाव के मिलनसार व्यक्ति थे। कायस्थ पाठशाला मे मामूली से अध्यापक होने के कारण इनका परिवार साधारण था।

दुर्भाग्य की बात जब शास्त्री जी की उम्र डेढ वर्ष की थी कि इनके पिताजी का देहान्त हो गया। पिता की मृत्यु के बाद इनकी आर्थिक स्थिति और खराब हो ग [illegible] । गत [illegible]नका बचपन अपने नाना के यहाँ बीता।

प्रारम्भ मे इनकी शिक्षा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र स्कूल काशी मे हुई। वहाँ आप पडित निष्कामेश्वर मिश्र के सम्पर्क मे आये। वे आपके गुरु थे। बहुत प्रेम करते थे आपसे। उन्ही के उपदेशानुसार आपका ध्यान दर्शन और अध्यात्मवाद की ओर आकर्षित

हुआ। वहीं आपने रामकृष्ण परमहंस तथा स्वामी विवेकानन्द के साहित्य का अध्ययन किया।

उसी समय की आपकी एक घटना है। एक बार विद्यार्थियों ने मिलकर जलपान के लिए कुछ पैसे इकट्ठे किये। सभी विद्यार्थियों ने पैसे दिये। आपके पास कुल तीन ही पैसे थे। जिन्हें आप महीनों से बचाये हुये थे। जब विद्यार्थियों ने आपसे कहा तब न देने के कारण आप मौन रहे। आखिर विद्यार्थी जीवन ही तो था। सभी ने मिलकर आपकी तलाशी ली। आपके पास सिर्फ तीन पैसे निकले। इस घटना से पंडित जी के दिल पर बहुत गहरा असर पड़ा। आपकी आर्थिक स्थिति का भान होते

ही उन्होने अपने बच्चो को पढाने के लिए आपको नियुक्त कर दिया। वे आपको पाँच रुपये मासिक दिया करते थे।

हाँ, तो चार वर्ष तक दर्शन व भारतीय सस्कृति का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करने के बाद उन्होने 'शास्त्री' की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की। तभी से आप लालबहादुर शास्त्री कहलाने लगे।

उन दिनो जब आप शिक्षा ग्रहण कर रहे थे जगह-जगह क्रान्ति की ज्वाला भडकी हुई थी। भारत को आजाद कराने के लिए देश के सच्चे भक्त क्रान्ति की आग मे कूद पडे थे। स्थान-स्थान पर आन्दोलन हो रहे थे। जलियाँ वाला काण्ड से देश मे क्रान्ति की आग और भडक गई।

१० फरवरी १९२१ मे गाधीजी ने काशी मे आकर काशी विद्यापीठ की स्थापना की। वही से आपने मैट्रीकुलेशन की परीक्षा पास की।

उन्ही दिनो गाधीजी के आह्वान पर आप विद्यार्थी जीवन मे ही स्वतन्त्रता-सग्राम मे कूद पडे। उस समय आपकी आयु सोलह वर्ष की थी।

असहयोग आन्दोलन जोरो पर चल रहा था। उसी आन्दोलन मे आपको गिरफ्तार करके जेल भेज दिया गया। पुलिस के डन्डे खाकर भी आपने हिम्मत न हारी और देश को आजादी के लिए आप निरन्तर आगे बढते ही रहे।

कारावास से छूटने के बाद क्रान्ति मे आप निरन्तर भाग लेते रहे। शिक्षा का कार्य भी सुचारु रूप से चलाया। गाधीजी आपसे बहुत प्रभावित थे। सन् १९२६ मे शास्त्री की उपाधि ग्रहण करने के बाद आप 'लोक-सेवक मडल' के सदस्य बने। इस मण्डल के प्रधान स्व० लाला लाजपत राय थे। उन पर भी आपका गहरा प्रभाव पड़ा।

सन् १६२८ मे इनका विवाह ललिता जी से हुआ। वे धार्मिक विचारधारा की स्त्री है।

मडल के सदस्य रहते हुए आपने बडे रचनात्मक कार्य किये। राजर्षि पुरुषोत्तमदास टडन से आप बहुत प्रभावित हुए। आपने टडन जी से तपस्यापूर्ण जीवन व देश की सस्कृतिक के लिए प्रेम का पाठ सीखा। गाधीजी की बातो का आप पर गहरा प्रभाव था। सन् १६३० से १६३५ तक प्रयाग जिला कांग्रेस कमेटी के आप अध्यक्ष रहे। पांच वर्षो मे अपने जो कार्य कर दिखाया वह सराहनीय था। आपकी इसी कर्मठता, सगठन क्षमता को देखते हुए सन् १६३७ मे आपको उत्तर प्रदेश कांग्रेस का मत्री चुन लिया गया।

सन् १६४१ मे फिर १६४२ मे भारत छोडो आन्दोलन मे आप जेल गये। १६४५ तक आपको कई बार जेल यात्रा करनी पडी।

क्रान्ति की धधकती ज्वाला को देखकर अग्रेजी सरकार ने सन १६४७ मे भारत को स्वतन्त्र कर दिया। अपनी सरकार बनी और शास्त्री जी को उत्तर प्रदेश के मुख्य मत्री पत जी ने आपना सभा सचिव चुन लिया।

आप उत्तर प्रदेश मे पुलिस तथा यातयात विभाग के मत्री पद पर रहे। इस पद पर रहकर आपने कई रचनात्मक कार्य किये।

सन् १६४६ मे भूतपूर्व प्रधान मत्री स्वर्गीय जवाहर लाल नेहरु ने जब कांग्रेस का अध्यक्ष पद सभाला आपकी कर्त्तव्य-परायणता को देखकर उन्होने आपको नई दिल्ली बुला लिया। यहां उन्होने आखिल भारतीय कांग्रेस के महामत्री पद पर कार्य किया।

इस पद पर कार्य करते रहने के बाद नेहरू जी के नेतृत्व मे बने मत्रीमण्डल मे आपको रेल व परिवाहन के मत्री पद पर नियुक्त कर दिया गया। इस पद पर रहकर आपने जनता की काफी सेवा की। साधारण जीवन बिताने के कारण आप अपनी जनता के हर कष्ट को भलीभाँति समझते थे। यात्रियो की सुविधाओ को देखकर आपने सोचा क्यो न ऐसी गाडी चलाई जाय जिसमे प्रथम, द्वितीय श्रेणी के डिब्बे न हो और उस गाडी को जानता गाडी के नाम से सम्बोधित किया जाय। ऐसा ही आपने किया। आम जनता के लिए आपने ही प्रथम बार 'जनता' गाडी का श्रीगणेश किया। इतना ही नही रेल मत्री पद पर रहते हुए आपने यात्रियो को हर प्रकार की सुविधा पहुँचाने का भरसक प्रयत्न किया।

आपके मत्री पद पर रहते हुए एक बार रेल दुर्घटना हो गई। उसकी जिम्मेदारी आपने अपने ऊपर लेकर रेल-मत्री पद से त्याग-पत्र दे दिया। जब आपसे त्याग पत्र देने का कारण पूछा तो आपने कहा—'गाधीजी ने एक बार कहा था कि मत्रियो को कुर्सी पर जम कर नही बैठना चाहिए। गलती कोई करता, दण्ड बापू जी अपने को देते थे। वही मैने भी किया है जो हमारे रहनुमा ने हमे सिखाया।'

वास्तव मे गाधीजी के सिद्धान्तो को इन्होने गहराई से अपनाया।

सन् १९५७ मे इन्हे सचार एव परिवाहन का मत्री बनाया गया। टी० टी० कृष्णमाचारी ने जब वाणिज्य एव उद्योग के मत्री पद से त्याग पत्र दिया आपको वह पद सौंप दिया गया। इस पद पर रहकर भी आपने सयम से कार्य किया। उसके बाद पत जी का स्वर्गवास हो जाने पर आप स्वराष्ट्र मत्री बना दिये गये।

२७ मई १९६२ मे भारत के लोकप्रिय प्रधान मन्त्री जवाहर-लाल नेहरू का स्वर्गवास हुआ। आपको वे अपना कई रूप से उत्तराधिकारी मानते थे। उनकी मृत्यु के बाद स्वतन्त्र भारत के प्रधान मन्त्री पद पर कार्य करते हुए आपने भारतीय जनता के हृदय मे आपना एक विशेष स्थान बना लिया। २ अक्टूबर १९६४ मे आपने काहिरा के लिए प्रस्थान किया। यह आपकी प्रथम विदेश यात्रा थी। आपने विश्व का भ्रमण किया और जहाँ भी गये आपका भव्य स्वागत हुआ।

जिस समय ये प्रधान मन्त्री बने देश पर सकट के बादल छाये हुए थे। एक ओर चीन, दूसरी ओर कश्मीर के प्रश्न को लेकर पाकिस्तान देश की सीमा पर अमानवीय व्यवहार कर रहा था। इधर देश मे खाद्य समस्या फैली हुई थी। शास्त्री जी ने बडे साहस से काम लिया। देश मे बढती हुई कीमतो को रोका।

कच्छ सीमा पर पाकिस्तान आगे बढ रहा था। भारतीय फौजो ने उसका डट कर मुकाबला किया था। आखिर कच्छ समझौता हुआ। लेकिन उसके तुरत बाद पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया। भयकर युद्ध हुआ। इस युद्ध मे शास्त्री जी ने अपने साहस एव शौर्य का अद्‌भुत परिचय दिया और उन्होने विश्व को यह दिखा दिया कि शान्ति का उपासक भारत समय आने पर अपनी जान की परवाह न करता हुआ दुश्मनो के दाँत भी खट्टे कर सकता है।

शास्त्री जी ने भारतीयो को जिस वीरता का पाठ पढाया उससे भारत का पुरातन शौर्य प्रकाशित हो उठा। छोटे से कद का साधारण दीखने वाले व्यक्ति ने लोकतन्त्र भारत के उच्च आसन पर बैठकर जिस अदम्य वीरता का परिचय दिया उसे देख अम-रिका, रूस ब्रिटेन आदि बडे-बडे राष्ट्र दाँतो तले अँगुली दबा

गये। युद्ध के मैदान मे पाकिस्तान को मुंह की खानी पडी। आखिर पाकिस्तान ने समझौता करना चाहा।

रूस के प्रधान मन्त्री श्री कोसिगिन के आग्रह पर भारत और पाक के बीच समझौता करने के लिए ताशकद का स्थान नियुक्त किया गया। पाकिस्तान के राष्ट्रपति श्री अयूब खाँ वहाँ पहुँचे। भारतीयो के लोकप्रिय प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री जी भी ताशकद गये। लेकिन क्या मालूम था भारत से रूस की धरती ताशकद पर जाने वाला वीर फिर से कभी अपनी प्रिय जनता से न मिल सकेगा।

ताशकद समझौता हो गया और साथ ही भारतीयो के हृदय के बादशाह लालबहादुर शास्त्री दस जनवरी १९६६ की अर्ध-रात्रि को अपने देशवासियो से मुख मोडकर सदैव के लिए चले गये। उनकी मृत्यु के समाचार से सारे विश्व की आँखे छल-छला आई भारत का बच्चा-बच्चा बिलख-बिलखकर रो पडा।

युगद्रष्टा वीर लालबहादुर शास्त्री का शव ताशकद से दिल्ली लाया गया। यमुना के किनारे स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू जी की समाधि शान्ति वन के समीप इनका दाह सस्कार किया गया। करोडो दिलो ने अपने प्रिय नेता को श्रद्धाजलि अर्पित की।

आज शास्त्री जी हमारे बीच नही ह, फिर भी भारतीय जनता उन्हे हृदय से कभी नही भूल सकती। भारत का इतिहास और विजय घाट सदैव हमे प्रिय नेता की याद दिलाती रहेगी।

○

भारत की तृतीय एवं प्रथम महिला प्रधानमंत्री

श्री मती इन्दिरा गाँधी

बच्चो ! इस चित्र को तुम भली भांति पहिचानते होगे। यह चित्र भारत के प्रधान मंत्री स्वर्गीय ज्वाहर लाल नेहरू की सुपुत्री एवं स्वतंत्र भारत की तृतीय तथा प्रथम महिला प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का है।

भारत के स्वतन्त्र होने के वाद स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू ने भारत के प्रधान मत्री का पद ग्रहण किया था। भारत की जनता के ही नही वल्कि विश्व प्रिय नेहरू ने प्रवान मत्री के पद पर रहकर जिस प्रकार निस्वार्थ भाव, अतीव साहस, लगन, धैर्य एव आत्म विश्वास के साथ कार्य किया उसी तरह श्री मति इन्दिरा गाँधी भी आज अपने स्वतन्त्र देश भारत की वाग-डोर सभाले हुए है।

श्रीमति इन्दिरा गाँधी का जन्म १६ नवम्वर सन् १६१७ को हुआ था। यह तो तुम जानते ही हो श्रीमती इन्दिरा गाँधी के पिता का नाम प० जवाहरलाल नेहरू था भारत के श्रेष्ठ वकीलो मे से थे। इनकी माता का नाम कमला नेहरू था। वे माता-पिता की इकलौती सन्तान होने के कारण आपका लालन-पालन बडे ही प्रेम और शान शौकत से हुआ। किशोरावस्था मे इन्हे 'इन्दिरा प्रियदर्शिनी' के नाम से सम्वोधित किया जाता था, किन्तु जवाहरलाल नेहरू प्यार से अपनी वेटी को 'इन्द्र' कह कर ही पुकारते थे।

वचपन मे इनकी शिक्षा 'शान्ति-निकेतन' मे विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की देख-रेख मे हुई। यहाँ रहकर आपने वगता, कला व सस्कृति का खूव अध्ययन किया। इन्दिरा का प्रभाव रवीन्द्र वावू पर भी पडा। निकेतन मे विदा करते समय उन्होने नेहरू को एक पत्र मे लिखा था—मै वडे भारी मन मे वेटी इन्दिरा को निकेतन से विदाई दे रहा हूँ। यह मेरे स्कूल की अमूल्य निधि है। मुझे आशा है कि इन्दिरा का भावी जीवन अच्छा रहेगा।

इन्दिरा जी ने स्वय भी कहा है कि निकेतन मे मुझे सुर-क्षित और शान्ति का वातावरण मिलता था। यह सत्य ही था। आनन्द भवन जो इनका घर है राजनीति का अखाड़ा वना हुआ

था। इन्दिरा जी पर इसका गहरा प्रभाव पडा। जब आप बाहर वर्ष की थी आपने 'वानर' सेना एकत्र की थी। वह सेना बडे-बडे कार्यकर्त्ताओ की सहायता किया करती थी। बहुत लजीली और कम बोलने वाली इन्दिरा जी पर गांधीजी का प्रभाव पडा और तब अन्दर-ही-अन्दर देश-भक्ति की भावना जागृत होने लगी। वही कन्या जिसके जन्म पर बधाई-पत्र जो श्रीमती सरोजिन नायडू ने प० जवाहरलाल नेहरू को लिखा था उसमे उसने इन्दिरा जी को 'भारत की नई आत्म' के नाम से सम्बोधित किया था। आज वह बात सत्यता लिये प्रत्यक्ष रूप मे हमारे समक्ष है।

माता कमला नेहरू जब बीमार हुई उन्हे इलाज के लिए योरोप ले जाया गया। उस समय इन्दिरा भी अपनी माता के साथ वहाँ गई थी। कमला की दशा सोचनीय होती जा रही थी और एक दिन सन् १९३६ को स्विटजरलैण्ड मे उनका निधन हो गया। पिता और पुत्री को कमला नेहरू के निधन से काफी दु ख हुआ। एक ओर क्रान्ति का दौर चल रहा था दूसरी ओर नेहरू जी पर मुसीबतो का बोझ पड गया था। उन्होने फिर भी साहस न तोटा। अपनी पुत्री को उन्होने इग्लैण्ड के समरविले कालेज आक्सफोर्ड मे प्रविष्ट करा दिया। इन्दिराजी ने वही शिक्षा प्राप्त की। आप वही की ग्रेज्यूएट हैं।

शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त इन्दिरा जी भारत लौटी। उन दिनो देश के कोने-कोने मे क्रान्ति की आग फैली हुई थी। प० नेहरू व मोतीलाल नेहरू मे देश प्रेम की लहरे उठ चुकी थी। उन्होने क्रान्ति को सफल बनाकर भारत को स्वतन्त्र कराने का दृढ सकल्प किया हुआ था। गाधीजी के सम्पर्क मे आकर इन्दिरा जी ने राष्ट्रीय भावना ने ऐसा रूप धारण किया कि २१ वर्ष की आयु मे स्वतन्त्रता सघर्ष के कारण उन्हे भी तेरह

मास का कारावास भुगतना पड़ा ।

उन दिनो गाधीजी 'भारत छोडो' का नारा लगाया। इंदिरा जी उस समय नववधु के रूप मे थी । गाधीजी के आह्वान पर वे पुन क्रान्ति के युद्ध मे कूद पड़ी ।

सन् १०४२ मे इन्दिरा जी का विवाह फिरोज गांधी के साथ हुआ । जैसा कि पीछे बताया जा चुका है 'भारत छोडो' आन्दोलन मे भाग लेने के कारण नव नवेली दुल्हन को कारा-वास मे जाना पडा था । उस समय अन्य नेतागण भी जेल मे ठूंस दिये गये थे । फिरोज गांधी ने भी अपनी वर्ष गॉठ जेल मे ही मनाई । चौदह मास का कारावास जीवन बिताया । फिर भी राष्ट्रीय भावना के प्रति आप मे कोई कमी नही आई ।

एक बार की बात है कि इलाहाबाद मे पानी के नल की कुछ गडबड हो जाने के कारण घर मे पानी आना बद हो गया। इन्दिरा जी ने दूसरे का साहरा न तका बल्कि स्वय ही कीचड मे बैठकर उन्होने पाइप को ठीक कर लिया । जब उनसे पूछा गया तो बोली—गाधीजी ने ही तो बताया है कि श्रम करने से घबराना नही चाहिए ।

कवि रवीन्द्रजी, गाधीजी तथा जवाहरलाल नेहरू का इन्दिरा पर गहरा प्रभाव पडा था। नेहरू जी ने एक बार जेल से "पिता का पत्र पुत्री के नाम" एक पत्र लिखा था। इसी प्रकार वे अपनी पुत्री मे हर दृष्टिकोण से उच्च भावनाये भरा करते थे। क्रान्ति मे भाग लेना भी इन्होने अपने पिता व गांधी जी से सीखा ।

सन् १९४७ मे भारत स्वतन्त्र हुआ लेकिन साथ ही दो भागो मे विभक्त हो गया। अग्रेजो ने एक हिन्दुस्तान और दूसरा जिन्नाह के कहने पर पाकिस्तान घोषित कर दिया। देश मे हलचल मच गई। हिन्दू मुसलमानो मे फिसाद हो गया। उसका

देश के सभी नेताओ को दु ख हुआ । इन्दिरा जी नही चाहती थी कि इस तरह बटवारा होने पर देशवासी इस तरह परस्पर खून की नदियां वहाये ।

देश की स्वतन्त्रता मे इन्दिराजी ने अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया । योग्य पिता की योग्य पुत्री दो देश रक्षार्थ जो कार्य किये उनकी सभी ने भूरि-भूरि प्रशसा की थी ।

एक वार की घटना बडी दिलचस्प है इन्दिराजी की । सन् १९५० की बात है । एक दिन इन्दिराजी कनाट प्लेस घूमने आई । वही पटरी पर एक अपाहिज बालक कुछ चीजे बेच रहा था । इन्दिराजी ने बालक को देखा तो प्रभावित हुई । उससे छोटी उम्र मे चीजे बेचने का कारण पूछा तो ज्ञात हुआ वह एक गरीव परिवार का है । इसी तरह चीजे वेच कर कार्य चलाता है । यहाँ तक कि वह किसी स्कूल मे शिक्षा ग्रहण भी नही करता । इन्दिराजी ने अपगो की दशा सुधारने के लिए उन्होने कुछ सामाजिक कार्यकर्ताओ से विचार-विमर्श किया । उसके बाद उन्होने बाल सहयोग सस्था की स्थापना की । इस सस्था मे अनाथ व सडको पर मारे-मारे फिरने वाले बच्चो को रखा जाने लगा । यह इन्दिराजी के परिश्रम का परिणाम है ।

इन्दिराजी अपने स्वर्गीय पिता प० जवाहरलाल नेहरू के साथ इग्लैंड, अमेरिका, रूस फ्रास आदि देशो की यात्रा कर चुकी है । आप अमेरिका कई वार गई ।

सन् १९५५ मे आप कांग्रेस कार्यकारिणी की सदस्य बनी । इसके अतिरिक्त कांग्रेस महिला विभाग और केन्द्रीय चुनाव बोर्ड, पार्लियामेंटरी बोर्ड और युवा कांग्रेस की भी आप सदस्य बनी । फरवरी १९५९ मे आप राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष निर्वाचित हुई । इनका अधिवेशन नागपुर मे हुआ था । सन् १९६० मे युनेस्को मे भारतीय प्रतिनिधि मण्डल की सदस्य

रही। उसके बाद सन् १९६४ तक युनेस्को की कार्यकारिणी की आप सदस्य रही।

अपने पिता की भांति इन्दिराजी ने हर क्षेत्र मे ज्ञान प्राप्त किया और जो सीखा उसे प्रयोग मे लाई। एक बार सन् १९५७ मे जब कांग्रेस कार्यकारिणी के लिए महासमिति के सदस्यो मे खुला मतदान हुआ तो श्रीमती इन्दिरा गाधी को सब से अधिक मत मिले थे। यह इनकी लोकप्रियता का प्रतीक है। नेहरूजी के जीवन काल मे कई बार उनके मत्रिमण्डल मे लिये जाने की इन्दिराजी पर चर्चायें हुई लेकिन इन्होने उचित न समझा।

नेहरू जी के निधन के पश्चात् जब स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्री प्रधानमन्त्री बने तो उन्होने इन्दिराजी को अपने मत्रि-मण्डल मे लेने का प्रश्न उनके सामने रखा। इसमे वे सहमत हो गईं। और उन्हे सूचना और प्रसारण मन्त्री के पद पर नियुक्त कर दिया गया। आपने अपने पद पर रहकर पूरी निष्ठा, तत्परता व कुशलता से अपने दायित्व को निबाहा।

२७ जनवरी १९६५ मे आप सूचना एव प्रसारणमन्त्री की हैसियत से आपने कैनेक टिक्टि, इतियान आदि देशो का भ्रमण किया। न्यूयार्क मे इसी बीच आपने 'नेहरू स्मारक प्रदर्शनी का उद्घाटन भी किया था।

श्रीमती इन्दिरा गाधी अहम् भाव से बहुत दूर है। मानवता कूट-कूट कर भी है इनमे। हर किसी बात को बडे ध्यान मे सुनकर अपना निर्णय देती है। राजनैतिक क्षेत्र मे निरन्तर इन्होने बडी लगन से कार्य को पूरा किया। जनवरी १९६६ मे अचानक ताशकन्द मे श्री लालबहादुर शास्त्री जी के निधन से आपको गहरा दुःख हुआ। समस्त राष्ट्र शोक मे डूबा हुआ था। उनकी मृत्यु के बाद प्रश्न आया किसे प्रधानमन्त्री बनाया

जाये। सभी आखें इदिराजी पर लगी थी और इन्दिराजी को प्रधानमन्त्री पद सँभालना पडा। पिता की मृत्यु के बाद भी एक बार यही प्रश्न आया था लेकिन इन्दिराजी ने उस समय स्वीकार न किया था। चाहती तो वे अब भी न थी लेकिन भारत की बागडोर सँभालने का दायित्व आपने सभी के कहने पर अपने ऊपर ले लिया।

इन्दिराजी के प्रधानमन्त्री बनने पर सरोजनी नायडू के वे शब्द साकार हो गये जिन्हे उन्होने इन्दिराजी के जन्मकाल के समय लिख भेजा था। प्रधानमन्त्री बनने के बाद इन्दिराजी के सामने अनेक समस्याएँ आ खडी हुई। अहिंसा और विश्वास के बल पर इन्होने उन्हे दूर करने का भरसक प्रयत्न किया।

३० जून १९६६ मे श्रीमती इन्दिरा गाधी ने त्रिवेन्द्रम का दौरा किया। वहाँ वे प्रथम बार गई। अपने प्रधानमन्त्री के स्वागत के लिए त्रिवेन्द्रम की जनता उमड पडी। इसी प्रकार देश के विभिन्न-विभिन्न भागो का श्रीमती इन्दिरा गाधी ने दौरा किया। देश की हालत को अच्छी तरह समझकर इन्होने एक ऐसा कदम उठाया जिससे भारत की समस्त समस्याएँ हल हो सके। उन्होने प्रजा से मिलने का समय भी निर्धारित कर दिया। इनका कहना है कि जनता का दुःख-दर्द सुनना मेरा परम कर्त्तव्य है। मैं अपनी जनता के दुःखो को दूर करने का सदैव प्रयत्न करती रहूँगी।

प्रधानमन्त्री बनने के बाद इन्दिराजी ने विदेशो का दौरा किया। भारत की प्रतिष्ठा को बढाते हुए आपने हर जगह अपनी कुशलता का अद्भुत परिचय दिया। जहा भी आप गई वहां की जनता ने आपका हार्दिक स्वागत किया।

श्रीमती इन्दिरा गाधी ने २४ जनवरी १९६६ को प्रधान-

मन्त्री का पद ग्रहण करके भारतीय नारी का गौरव बढाया है। इतना ही नही इन्होने झाँसी की रानी की परम्परा को दोहराया है। देखा जाय तो झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की जन्मतिथि भी वही थी जो इन्दिराजी की है। देश पर यदि कोई विपत्ति पडी तो यह निश्चय है कि श्रीमती इन्दिरा गाधी भी लक्ष्मीबाई की तरह अपना कौशल दिखायेगी।

धैर्य, आस्था और कर्म पथ पर डटे रहने मे इन्दिराजी दृढ है। पिता की भाँति हर कार्य को विश्वास के साथ सहर्ष करने का इन्दिराजी प्रयत्न करती है।

इन्दिराजी नई पीढी की प्रतिनिधि है। नई पीढी की आशा और विश्वास को लिए वे अपने पथ पर दृढ हैं। राष्ट्र को 'राष्ट्र की बेटी' इन्दिराजी से बहुत कुछ आकांक्षा है और विश्वास है कि जिस प्रकार फूलो का मार्ग छोडकर वे काँटो के मार्ग पर उतरी। देश को स्वतन्त्र करने मे अपना पूर्ण योग प्रदान किया। उसी प्रकार अपने राष्ट्र को उन्नति की ओर अग्रसर करने मे सदैव अग्रिणी है और भविष्य मे भी रहेगी। लोकतन्त्रात्मक और समाजवाद के पथ पर देश को अग्रसर करने की हार्दिक इच्छा लिए इन्दिरा जी पूर्ण निष्ठा से अपना कर्तव्य निवाह रही हैं। वे बडे राष्ट्र की प्रधानमन्त्री है लेकिन स्वय को वे प्रधानमन्त्री न कहकर राष्ट्र की सेविका कहती है। उनका कहना है कि राष्ट्र की सेवा से बढकर कोई सेवा नही है। जिस देश की मिट्टी मे पलकर बडी हुई हू, उसकी रक्षा करना मेरा परम कर्त्तव्य है।'

जब से इन्दिरा जी प्रधानमन्त्री पद पर आसीन हुई है तब से उन्होने अनेको रचनात्मक कार्य किये है। हमे पूर्ण विश्वास है कि इन्दिरा जी के नेतृत्व मे राष्ट्र समृद्धशाली होगा। अगर

कोई भी आक्रान्ता हमारे देश पर आक्रमण करने का दुसाहस करेगा तो यह निश्चय है इन्दिरा जी झाँसी की रानी की भांति अपना रूप दिखाकर ही रहेगी।

हम भगवान से प्रार्थना करते है कि श्रीमती इन्दिरा गांधी तथा उनके दोनो पुत्र दीर्घायु हो।

राष्ट्र को देवी इन्दिराजी पर गर्व है। राष्ट्र का बच्चा-बच्चा प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी के साथ है। उन्हे गर्व है इन्दिरा जी पर और इनसे इन्हे बहुत-सी आशाएँ भी।

●

भारत के प्रथम उप-प्रधान मन्त्री

सरदार बल्लभ भाई पटेल

बच्चो ! अब तुम्हे स्वतंत्र भारत के उस महापुरुष के विषय मे बताऊँगा जिन्होने लोह-स्तम्भ की भाँति अपने कर्त्तव्य-पथ पर दृढ रहकर भारत की स्वतंत्रता के लिए ब्रिटिश सरकार के छक्के छुड़ा दिये थे। वे महान् पुरुष थे गुजरात प्रान्त के करमसद गाँव मे ३१ अक्तूबर १८८५ ई० को जन्म लेने वाले सरदार वल्लभ भाई पटेल।

वल्लभ भाई पटेल के पिता झवेरभाई पटेल खेती करके अपना गुजारा करते थे। आर्थिक स्थिति साधारण होते हुए भी इनके पिता पक्के देशभक्त थे। एक बार इन्दौर के महाराजा ने इनके पिता को गिरफ्तार कर लिया था क्योकि सन् १८५७ की क्रांति मे उन्होने झाँसी की महारानी लक्ष्मीबाई की फौज मे भर्ती होकर अंग्रेजो का मुकाबिला किया था।

एक दिन की बात है कि इन्दौर के महाराजा महल के एक कमरे मे शतरंज खेल रहे थे। उसी के करीब झवेरभाई पटेल नजरबंद थे। शतरंज का आपको भी अधिक शौक था अत महाराजा को हारते देख आपने उन्हे चाल बताई। इसी से महाराजा की जीत हुई और उन्होने उन्हे रिहा कर दिया।

झवेर भाई के दो पुत्र हुए। बड़े का नाम विट्ठल भाई पटेल और छोटे का नाम वल्लभ भाई पटेल था। दोनो भाई निर्भीक और युद्धकला मे निपुण थे।

वल्लभ भाई का बचपन माँ की देख-रेख मे बीता। प्रारम्भिक शिक्षा उन्होने गाँव मे ही ली और उसके बाद वे नदियाद गये। वहाँ शिक्षा समाप्त करके बडौदा पहुँचे। बडौदा स्कूल की एक घटना ने उन्हे स्कूल छोडने के लिए विवश कर दिया और पुन नदियाद जाकर ही इन्होने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की।

प्रारम्भ से ही वल्लभ भाई पटेल निडर थे। खतरो का सामना करना उन्हे अत्यधिक प्रिय लगता था। मैट्रिक की परीक्षा मे उत्तीर्ण होने के बाद उन्होने विलायत जाकर बैरिस्टर बनने की इच्छा प्रकट की। आर्थिक दशा इतनी सुदृढ न थी कि वे अपनी इच्छा की पूर्ति कर पाते। अत उन्होने एक युक्ति सोची। उन्होने मुख्तारी की परीक्षा पास की और वे मुख्तार हो गये। इससे उन्होने कुछ धन एकत्र किया और एक कम्पनी

से सम्पर्क स्थापित करके वे विलायत चले गये ।

तीन वर्ष बाद प्रथम श्रेणी मे बैरिस्टरी की परीक्षा पास करके जब वे भारत लौटे तो देश मे क्रांति की आग उग्र रूप धारण किये हुए थी । उनकी इच्छा थी कि वे राजनीति मे भाग ले । अत अपने भाई को कुटुम्ब का पालन-पोषण का भार सौंप वे स्वय क्रांति की आग मे कूद पडे ।

गाधी जी के सम्पर्क मे आकर उन्होने देश को आजाद कराने का दृढ सकल्प किया ।

एक बार की बात है । खेडा जिले मे प्रकृति के प्रकोप से फसल नष्ट हो गई । सरकार के अत्याचार बढ रहे थे । किसानो से लगान वसूल करने के लिए सरकार ने धमकी दी थी । गाधी की शरण मे किसान आकर रोने लगे । गाधी जी को सरकार के व्यवहार पर दु ख हुआ । उन दिनो वे अहमदाबाद मे थे । गाधी जी ने सरकार के विरोध मे किसानो की सहायता करने का बीडा उठाया । उस समय पटेल ही ऐसे व्यक्ति थे जो गाधी जी के साथ अगुआ बने । कमर कसकर उन्होने सरकार से लगान न लेने के लिए सत्याग्रह किया । उनकी दृढता को देख-कर सरकार को झुकना पडा था ।

रॉलट-ऐक्ट का विरोध करने के लिए गाधी जी ने जो देशव्यापी हडताल की घोषणा की थी उसे असफल बनाने के लिए सरकार ने जुलूस पर गोलियाँ चलाई । ४ मार्च १९१९ को देश मे एक नई क्राति ने जन्म लिया । वल्लभ भाई पटेल ने हडताल की अगवानी अहमदाबाद मे की । उसी के परिणाम-स्वरूप अग्रेजो के मन मे उनका भय समा गया । गाधी जी के गिरफ्तार होने के बाद गुजरात मे हो रही क्राँति का नेतृत्व वल्लभ भाई पटेल ने किया ।

गुजरात की प्रांतीय काग्रेस कमेटी के आप उप-प्रधान थे साथ ही अहमदाबाद म्युनिसिपल बोर्ड के अध्यक्ष भी। इस पद पर आप पाच वर्ष तक रहे और जनता की सेवा करते रहे।

उन्ही दिनो 'नागपुर झण्डा सत्याग्रह' को लेकर काग्रेस के स्वय सेवको ने जुलूस निकालने का आयोजन किया। सेठ जमनालाल बजाज उस सत्याग्रह का नेतृत्व कर रहे थे। पुलिस ने उन्हे गिरफ्तार कर लिया। तब नागपुर पहुँचकर आपने निर्भयतापूर्वक सत्यागह का नेतृत्व किया। अन्त मे आपकी विजय हुई।

एक बार जल-प्रलय के कारण बरदौली के किसानो की सहायता के लिए आपने अग्रेजो के अत्याचारो के विरुद्ध मोर्चा लिया। सरकार किसानो को तग करके उन बाढ पीडितो से लगान वसूल करना चाहती थी। वल्लभ भाई पटेल ने सरकार के विरुद्ध सत्याग्रह आरम्भ कर दिया। इस सघर्ष मे सफलता प्राप्त हुई। तभी से आपको 'सरदार' की उपाधि मिली थी।

आजादी का सग्राम पूर्णरूप से चल रहा था। ७ मार्च को गुजरात के एक गाव मे पहुँचकर जब आपने कलक्टर के प्रतिबध लगाने पर भी भाषण दिया तो आपको गिरफ्तार कर लिया गया और तीन मास की सजा का हुक्म सुना दिया गया। पाँच सौ रुपये जुर्माना न देने पर आपकी सजा मे तीन सप्ताह की वृद्धिकर दी गई थी। २६ जून को रिहा होने के बाद आप पुन सत्याग्रह मे कूद पडे। आपको कई बार जेल की यात्रा करनी पडी।

सरदार वल्लभ भाई पटेल की राष्ट्रीय सेवा की चर्चा दूर-दूर तक फैल चुकी थी। काग्रेस के वार्षिक अधिवेशन का आप को अध्यक्ष चुना गया। जब भगतसिह को फासी दी गई और

उन्ही दिनो गांधी-इरविन समझौता हुआ था, उस समय आपने अध्यक्षपद से भगतसिह की याद मे जो भाषण दिया था वह हृदय स्पर्शी था।

अग्रेजो के अत्याचारो के विरुद्ध आजादी की लडाई लडते हुए सभी नेता अपने प्राणो की बजी लगा चुके थे। आखिर अग्रेजो के हौसले पस्त होने लगे और उन्होने भारत को आजाद कर देने का निणय किया। १५ अगस्त १९४७ को भारत आजाद हो गया। स्वतन्त्रता मिली और साथ ही भारत के दो टुकडे हो गये। दूसरा मुसलमानो के लिए पाकिस्तान बन गया।

यद्यपि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् ग्यारह कॉग्रस कमेटियो ने इन्हे प्रधान मत्री बनने की सिफारिश की थी। परन्तु उन्होने स्वीकार न किया था। वे सिर्फ कार्य करना चाहते थे। इससे प्रकट होता हे कि देश के लिए वे बडे से बडा त्याग करने को सदैव तत्पर रहते थे। उनकी यही भावना भारतीयो के मन मे घर कर गई थी जिससे उन्हे उप-प्रधान मत्री के पद पर आरूढ होकर कार्य करने के लिए विवश किया। वास्तव मे सरदार पटेल चाहते थे कि वे स्वतन्त्र रूप से कार्य करे। पद का लोभ उन्हे न था फिर भी जनता की इच्छा को वे ठुकरा न सके।

उपप्रधान मत्री बनने के बाद उन्होने पूरी लगन से अपने फर्ज को निबाहने का सकल्प किया।

जब अग्रेजो ने देसी रियासतो की बागडोर खुली छोड दी और उन्हे हिन्दुस्तान या पाकिस्तान मे मिलने के लिए पूर्णरूप से स्वतन्त्र कर दिया तो दूरदर्शी सरदार पटेल यह सहन न कर सके। वे जानते थे कि इसका परिणाम भारत के भविष्य के लिए खतरनाक साबित होगा। अग्रेजो की यह बन्दर बॉट वाली नीति देश का पूर्णरूप से विघटन कर देगी। ऐसा सोच सरदार

पटेल ने अपनी चाणक्य बुद्धि से काम लिया। राजा महाराजाओ पर ऐसा जाल फेका कि विवश होकर उन्हे इनकी बाते स्वीकार करनी पडी। रियासतो को खत्म करके सरदार पटेल ने भारत के लिए एक अनोखा कार्य किया। वे जानते थे कि यदि रियासते हाथ से निकल गई तो देश बर्बाद हो जायेगा।

स्वतन्त्र भारत के आप प्रथम उप प्रधान मन्त्री बने। भारत के गृहमन्त्री पद को आपने सँभाला। उन्होने अपने शासनकाल मे भारत की मान प्रतिष्ठा का पूर्णरूप से ध्यान रखा और उसकी एकता के लिए बराबर प्रयत्न करते रहे।

जैसेरियासत हैदराबाद का प्रश्न उनके सामने निकट था। वहाँ नवाब पाकिस्तान से समझौता करना चाहता था। सरदार पटेल उसे सहन न कर सके और १२ नवम्बर १६४७ को जूनागढ पहुँचकर आपने हैदराबाद के नवाब को चेतावनी दी। इस पर भी जब नवाब ने कोई ध्यान न दिया तो जनरल चौधरी के सेनापतित्व मे आपने हैदराबाद मे प्रवेश किया। अन्त मे हैदराबाद के नवाब को हार माननी पडी। यह आपकी बहादुरी का ही परिणाम था कि आपने समस्त रियासतो को खत्म करके 'सौराष्ट्र सघ' की स्थापना की थी।

इस तरह से लोहपुरुष सरदार पटेल ने विशाल और अखण्ड भारत की नीव डाली और उपप्रधान मन्त्री के रूप मे उन्होने इस तरह से कार्य किया कि प्रत्येक भारतीय के मन मे उनका विशेष स्थान बन गया। भारत के प्रत्येक नागरिक के मुँह पर यही शब्द थे।

'स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् यदि सबसे बडा कोई राजनीतिज्ञ हुआ है तो वह है सरदार पटेल। लोह पुरुष सरदार पटेल, जिन्होने लोह-स्तम्भ की तरह अडिग रहकर स्वतन्त्र भारत का भविष्य ही बदल दिया।'

वास्तव मे उनका चिंतन राष्ट्रीयता से परिपूर्ण और मौलिक था। यदि सरदार पटेल होते तो कश्मीर का प्रश्न कभी का समाप्त हो गया होता।

इस देश का यह दुर्भाग्य रहा कि जिन-जिन महापुरुषो की हमे सकट के समय आवश्यकता हुई है उन महापुरुषो का हमारे बीच सदा अभाव रहा है।

आपने एक बार कहा था, मै मुसलमानो का सच्चा मित्र हूं यद्यपि मुझे उनका दुश्मान कहा जाता है। मै लाग-लपेट की बाते नही करता। मुसलमानो को मै कह देना चाहता हूं कि केवल शाब्दिक समथन से ही वे अपने पुराने पापो को नही धो सकते। उन्हे चाहिए कि वे पाकिस्तान के हमलो का विरोध करे और देश भक्ति का परिचय दे। जो देश के प्रति वफादार नही है उन्हे चाहिए कि वे पाकिस्तान चले जाये।'

ऐसे थे सरदार पटेल जिन्होने अपनी सच्चाई और लगन से देश के स्वतन्त्रता सग्राम मे भाग लिया। आजादी के बाद भी अपने कर्त्तव्य को पूर्ण निष्ठा से निभाया। वे सदैव गरीब वर्ग तथा मजदूरो के प्रति सहानुभूति दर्शाते रहे और जो भी उन्होने उनके प्रति किया वह सदैव स्मरण रहेगा। उन्होने बम्बई की मजदूर सभा मे अपने भाषण मे कहा था, 'आज हम चौराहे पर खडे है। हमारी भूले हमे हमेशा के लिए बरबादी के गड्ढे मे गिरा देगी। हमे बहुत सोच समझकर आगे बढना है। बरबाद होगे तो हम दोनो होगे। मजदूर भी पूंजीपति भी। दोनो के भविष्य एक-दूसरे से मिले हुए है।'

सचमुच वे गरीबो के भी दोस्त थे और पूंजीपति के भी। आप हमेशा देश को एक सूत्र मे बांधने के लिए कार्य करते रहे।

और इसी प्रकार अपने देश की सेवा करते हुए एक दिन १५ दिसम्बर १९५० को आप परलोक सिधार गये। आपकी

मृत्यु से सारे देश मे शोक की लहर दौड गई। देश का बच्चा-बच्चा अपने प्रिय 'सरदार पटेल' की याद मे बिलख उठा था।

आज सरदार पटेल हमारे बीच नही है लेकिन उनकी देश-भक्ति की भावना, उनके कर्त्तव्य आज भी हमारे सामने है। हम सब मिलकर उनके सच्चे नागरिक बने यही हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

भारत के द्वितीय उप-प्रधान मत्री

श्री मोरारजी देसाई

बच्चो ! यहाँ जिस चित्र को तुम देख रहे हो यह हमारे स्वतत्र भारत के उप-प्रधानमत्री श्री मोरारजी देसाई का है। आज इनका नाम मान्यता प्राप्त चोटी के नेताओ मे सर्वप्रथम है क्योकि शासन की बागडोर सभालने मे ये एक ऐसे व्यक्ति है जिनके प्रति प्रत्येक भारतीय मे श्रद्धा की भावना है।

यदि हम श्री मोरारजी देसाई को 'लौह-पुरुष' की सज्ञा दे तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। वास्तव मे श्री देसाई स्पष्टवक्ता, दृढ निश्चयी तथा कुशल राजनीतिज्ञ है। भारतीय सस्कृति के उपासक और गाधीवाद के अनुयायी श्री देसाई जितने कठोर हृदयी है उतने कोमल भी। उनके कई एक ऐसे उदाहरण मिले है जिससे यह कहा जा सकता है कि प्रतिभा सम्पन्न श्री मोरार जी का हृदय स्नेह से परिपूर्ण है।

बच्चो ! इनका जन्म दिन २९ फरवरी को मनाया जाता है। बिल्कुल सादगी मे रहने वाले हमारे इन उप-प्रधानमत्री जी मे देशभक्ति की भावना कूट-कूटकर भरी है। बचपन से ही इनमे ऐसी भावनाएँ थी कि वे देश को उन्नति की ओर अग्रसर करे। इनका स्वप्न साकार हुआ।

उच्च शिक्षा ग्रहण करते हुए उन्होने आई० सी० एस० की परीक्षा उत्तीर्ण की और कुछ समय कलक्टर रहने के बाद आप भारत मे अग्रेजो के विरुद्ध होने वाली स्वतन्त्रता की क्रांति मे

कूद पड़े महात्मा गांधी, पं जवाहरलाल नेहरू तथा अन्य देशभक्त भारत मां को गुलामी की बेडियो से मुक्त कराने के लिए प्रयत्नशील थे। देश के कोने-कोने मे सत्याग्रह हो रहे थे। उन्ही दिनो सन् १९४२ मे 'भारत छोडो' आन्दोलन के समय ब्रिटिश सरकार ने उन्हे शाही मेहमान बनाया और यरवदा जेल मे भेज दिया। परन्तु यह साहस और धैर्य से अपने कार्य पर जमे रहे और जेल की तनिक भी चिन्ता न कर देश सेवा मे लगे रहे।

हां, तो महात्मा गांधीजी के सम्पर्क मे आकर आपने क्रांति मे दिल खोलकर भाग लिया। काफी यातनाएं आपने सही, किन्तु अपने उद्देश्य और कर्तव्य-पथ से आप विचलित नही हुए। आपने न जेलो की परवाह की न अंग्रेजी सत्ता के अत्या-

चारो की। आपका कहना यही था कि भारत माँ को आजाद कराकर ही हम चैन लेंगे।

इस क्रान्ति मे एक ओर महात्मा गाधी तथा उनके अनुयायी और दूसरी ओर भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, सुभाषचन्द्र वोस आदि देश के सच्चे सेवक अग्रेजो के छक्के छुडा रहे थे। भगतसिंह और उनके साथियो को फासी दी गई तो सारा देश खून के आँसू रो पडा था। क्रान्ति की ज्वाला और तेज हो गई और अन्त मे देश भक्तो से घवराकर अग्रेजी सत्ता को घुटने टेकने पडे। और उन्होने १५ अगस्त १९४७ को भारत को स्वतन्त्र कर दिया। साथ ही देश दो भागो मे विभक्त हो गया। एक भारत और दूसरा पाकिस्तान।

स्वन्तत्र भारत मे वित्तमत्री के पद पर कार्य करते हुए आपने अपनी कर्त्तव्य निष्ठा का अद्भुत परिचय दिया है। आपने स्वर्ण नियन्त्रण कानून लागू करके अपने देश की प्रगति के लिए जो सराहनीय कार्य किया वह सर्वविदित है।

आजकल आप भारत के उपप्रधान मत्री है। इस पद पर कार्य करते हुए आप कर्त्तव्य परायणता का परिचय दे रहे है। आप अपने देश को सुख-सम्पन्न देखना चाहते है। अत आपका प्रत्येक पग देश व समाज की भलाई और उन्नति के लिए ही उठता है।

श्री मुरारजी देसाई कथन से अधिक कर्म मे विश्वास रखते है। शान्ति और अहिंसा के उपासक श्री मुरार जी देसाई भारत के प्रत्येक नागरिक मे राष्ट्रीय भावना तथा कर्त्तव्य परायणता की अमिट झलक देखना चाहते है। उनका कहना है कि देश व समाज तथा मानव जाति की उन्नति के लिए जितना भी कार्य किया जाय वह थोडा है।

जैसा कि पीछे कहा गया है श्री मुरार जी देसाई स्पष्ट-वक्ता तथा कुशल प्रशासन कर्त्ता है, इसमे कोई सदेह नही। सचमुच आप गीता के भक्त, भारतीय सस्कृति के पुजारी तथा गांधीवाद के पुरस्कर्त्ता है। नशा वदी, खादी, प्राकृतिक चिकित्सा और अन्य उचित कार्यो को उन्होने पूरी लगन से किया है।

कहते है कि श्री मुरार जी देसाई कठोर हृदयी तथा पूंजी-वाद के समर्थक हैं लेकिन ऐसा नही है। उनके इस उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है कि वे जितने कार्य करने मे कठोर है उतनी ही मानवीयता उनमे भरी है। वात उस समय की है जव १९४५ मे श्री देसाई जी जेल से मुक्त हुए। उस समय उनके मित्र सैफ आजाद भी जेल से छूटे थे। उसके वाद १९५६ मे ईरान के शहनशाह जव भारत आये उनके साथ सैफ आजाद भी थे। उस समय श्री मुरार जी देसाई की मुलाकात उनसे वम्वई मे हुई थी। उसके काफी दिनो वाद सैफ साहव का पत्र श्री मुरार जी के नाम आया और मुरार जी जव ईरान गये तो उन्होने अपने मित्र का घर ढूंढ निकाला और वे उनके पुराने सादा मकान मे मिलने के लिए गये। दोनो मित्र एक दूसरे से मिलकर आनद-विभोर हो गये थे। इससे ज्ञात हो जाता है कि मुरार जी मे ऊँच-नीच, छोटे-वडे का भेदभाव लेशमात्र भी नही है। भारत के उपप्रधान मत्री होते हुए भी वे प्रत्येक को समान दृष्टि से देखते है।

श्री देसाई ने शासन मे रहकर अनेक क्रान्तिकारी सुधार किये हं और कर रहे है। अनुचित कार्य को वे रोकने के लिए अडिग हो जाते है। इन्हे दृढ विश्वास है कि एक-न-एक दिन भारत को वे उन्नति की चरम सीमा पर देख सकेगे।

वच्चो! तुम्हे भी वडे होकर अपने देश भारत की स्वतत्रता को कयाम रखना है। देश का भार तुम्हारे ही कधो पर है।

तुम ही भारत के भाविनिर्माता हो। अत तुम्हे अपने नेताओ के जीवन से शिक्षा ग्रहण करके वैसा ही बनने का प्रयत्न करना चाहिए। राष्ट्रपिता महात्मा गाधी, डा० राजेन्द्रप्रसाद, डा० राधाकृष्णन्, प० जवाहरलाल नेहरु, श्री लालबहादुर शास्त्री, श्रीमती इन्दिरा गाधी, सरदार वल्लभ भाई पटेल तथा श्री मुरार जी देसाई के जीवन से तुम्हे बहुत कुछ शिक्षा मिली होगी। अब तुम्हे उनके सिद्धातो तथा उद्देश्यो को अपनाकर आगे बढना है और अपने देश व समाज को नया रुप देना है। यही तुम्हारे जीवन का सुख से परिपूर्ण उन्नति का मार्ग होगा।